भगवत् कृपा

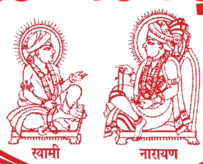

साकार प्रगट ब्रह्म को जो पहचाने, वो परम् को पाये

महाप्रभु स्वामिनारायण प्रणीत सनातन, सचेतन और सक्रिय गुणातीतज्ञान का अनुशीलन करने वाली द्विमासिक सत्संग पत्रिका

निजात्मानं ब्रह्मरूपं देहत्रयविलक्षणम् । विभाव्य तेन कर्तव्या भक्तिः कृष्णस्य सर्वदा ।। शिक्षापत्री, ११६

वर्ष 33 अंक : 3	29.5.2010 शनिवार (मई – जून)	शुल्क – प्रति अंक : 10.00 रु. वार्षिक : 50.00 रु.

आओ, अंतर्मन को प्रगट प्रभु से भर दें...

२८ मई *– ब्र.स्व.पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन – शाश्वत् स्मृति दिन!*

१ जून *– ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन!*

९ जून *– गुरुवर्य योगीजी महाराज का प्राकट्य दिन!*

एवं

प.पू. गुरुजी का भागवती दीक्षा दिन!

१२ जून *– ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन!*

गुणातीत समाज के ऐसे मंगलकारी दिन जब एक के बाद एक लगातार आ रहे हों, तब उनसे संबंध वाले हम मुक्तों को स्मृतियों की सौगात सहज ही प्राप्त होती है और... यूँ निरंतर स्मृतियों में लयलीन रहते हुए हम कब ब्रह्मानंद में रहते हो जाएंगे, इसका पता भी नहीं चलेगा।

श्रीजी महाराज और मूल अक्षरमूर्ति गुणातीतानंद-स्वामिजी पृथ्वी पर पधारे। परंतु महाराज को जैसे हैं वैसे पहचानने के लिए गुणातीत का समागम अनिवार्य शर्त है... ऐसे ही गुणातीत स्वरूप गुरुहरि योगीजी महाराज थे, जिनसे प.पू. काकाजी, प.पू. पप्पाजी एवं प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी जैसी दिव्य विभूतियों ने 'गुणातीतभाव' प्राप्त किया। दरअसल, 'गुणातीत' देह नहीं, बल्कि 'भाव' है। 'ब्रह्म' तत्त्व एक ऐसा तत्त्व है, जो एक बार प्रगट हुआ, तो फिर महासागर समान है। उसमें से जो जितना पी सके, उतना पी ले और... गुणातीतभाव को प्राप्त कर ले! सो ही, **'ईशा उपनिषद्'** में है –

पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते ।।

अर्थात् – पूर्ण में से पूर्ण ले लें, तो भी पूर्ण बाकी रहे। यह पूरा श्लोक भी प.पू. काकाजी के मुख से हम सबने कई बार सुना। २६ जनवरी १९८६ में दिए उनके अंतिम संदेश में भी उन्होंने यह श्लोक दोहराया। इससे भी अधिक, यह सब प.पू. काकाजी ने अपने जीवन में सिद्ध करके हमें दिखाया है। पूर्ण स्वरूप योगीबापा का सेवन करके न केवल वे स्वयं वैसी ही पूर्णता को पाए, बल्कि प.पू. पप्पाजी, प.पू. हरिप्रसादस्वामिजी, प.पू. अक्षरविहारीस्वामिजी, प.पू. साहेबजी, प.पू. गुरुजी, प.पू. दिनकरभाई, प.पू. भरतभाई जैसे प्रभुधारक स्वरूपों की गुणातीत समाज को भेंट दी और... यह परंपरा जारी ही रहेगी, ऐसे श्रीजी महाराज के वरदान भी हैं।

तो आओ, एक मात्र **गुरुवर्य योगीजी महाराज** को समर्पित **ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज** ने उनके जैसे ही जो गुण प्राप्त किए उनको केवल दोहराते ही न रहें, बल्कि उनके जैसा जीवन जीने का उद्देश्य बनाएं...

ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज–

* **सुहृद्‍भाव के वे सागर थे।** प्रभु के संबंध वाले सभी भक्तों के प्रति उन्होंने सतत अपेक्षारहित सुहृद्‍भाव रखा।
* सभी के **आत्मीय** थे। केवल चैतन्य को देख कर वे उससे अटूट बंधन बांधते और उसे संभालते।
* **निर्दोषबुद्धि का स्वरूप थे।** किसी का दोष नहीं देखना, ऐसा नहीं; बल्कि, कभी भी किसी का कोई दोष उन्हें दिखाई ही नहीं दिया, ऐसे वे थे। ऐसा कोई माहौल भी बना हो, तो वे वहाँ से उठ ही जाते।
* उन्होंने अपना संपूर्ण जीवन **भक्तों की सेवा** में समर्पित किया, लेकिन कभी उसका प्रदर्शन नहीं किया! चालीस वर्ष तक रसोई की सेवा में रहकर संबंध वाले मुक्तों की प्रभु के भाव से सेवा ही करते रहे। किसी को एहसास तक नहीं होने दिया कि वे प्रभु को अखंड धारे '**सिद्ध संत**' हैं।
* **धाम के साक्षात् अनादि स्वरूप** एवं अनेक चैतन्यों के प्राण समान परमपुरुष के रूप में विराजमान होने के बावजूद वे महाराज-स्वामी, शास्त्रीजी महाराज के 'दास' बने रहे... हमेशा **दासत्व से भरपूर**। मूर्ति, शास्त्रों और संतों के प्रति उनका आदरभाव-पूज्यभाव पराकाष्ठा पर था।
* उनका केवल एक ही उद्यम था कि किसी तरह संबंध में आए जीव के हृदय में श्रीजी महाराज को पधरा दें; स्वामिनारायण के आश्रित मुक्तों की 'स्वरूप निष्ठा' पक्की हो, और वे अपने जीव में सत्संग को ही प्राथमिकता देते हो जाएं और... इसी हेतु से सत्संग की कई कथाओं द्वारा रहस्य समझाते...
  जैसे–

✣ गुजरात में एक ज्योतिषी गाँव-गाँव घूमता था। लोगों के ग्रह-नक्षत्र देख कर गुज़ारा करता था। घूमता-घूमता वह काठियावाड़ में आया। एक गाँव में सत्संगी पटेल के घर गया। पटेल तो खेत में गया हुआ था। अतिथि ब्राह्मण जान कर पटेल की पत्नी ने उसका सत्कार किया।

इस ब्राह्मण ने बाई से कहा: *'तुम्हारे घर वाले पर साड़ासाती पनोती बैठी है।'*

बाई ने पूछा: *'जिसे साड़ासाती पनोती बैठी हो, उसका क्या होता है?'*

ब्राह्मण बोला: *'उसे गाँव-गाँव (दर-दर) भटकना पड़ता है।'*

बाई दृढ़ सत्संगी थी। उसने कहा: *'मेरे पति तो खेत में भात खाकर पेड़ के तले आराम से सो रहे हैं और साड़ासाती पनोती तो लगता है कि तुझे लगी है, जो सौ कोस दूर गुजरात से रोटी के लिए दर-दर भटकता हुआ यहाँ आया है। तुझे ब्राह्मण जान कर आवभगत की है; पर अब भोजन करके नौ दो ग्यारह हो जा। दोबारा कभी यहाँ आना नहीं।'*

जिसकी 'स्वरूपनिष्ठा' दृढ़ हो, उसे ग्रह, पनोती कुछ भी बाधारूप होती ही नहीं। उसे ओझा, तांत्रिक, जादूटोना या डोरा-ताबीज इत्यादि पर कभी भरोसा नहीं आता।

उसे हुई प्राप्ति का बल-विश्वास उसके रहन-सहन और व्यवहार से निम्न प्रकार स्पष्ट दिखाई देता है।

✣ **अगतराय गाँव के पर्वतभाई** महाज्ञानी थे व ब्रह्मस्थिति वाले थे। एक मिथ्याज्ञानी ब्राह्मण उनके पास आया और कहने लगा कि *'पंचीकरण' में ऐसा लिखा है, वैसा लिखा है।*

पर्वतभाई ने कहा: *'तेरा 'पंचीकरण' और मेरा 'शीकरण' दोनों एक जैसे हैं।'*

फिर ब्राह्मण तुरियावस्था की बात करने लगा।

पर्वतभाई ने कहा: *'तेरी 'तुर्या' तो मेरे पैरों तले रौंदी जाती है, इसलिए चलता बन।'*

शास्त्रों का ज्ञान झाड़ने वाले तो कई मिलते हैं, लेकिन शास्त्रों के मुताबिक जीवन जीने वाले विरल होते हैं। पर्वतभाई **ऐसी 'एकांतिकी स्थिति' वाले थे।**

ध्येय-लक्ष्य के बिना ज्ञान बेकार है। जैसे रेत में पानी छोड़ दो और वह बह जाता है, ऐसे ही लक्ष्य के बिना ज्ञान व्यर्थ है। **श्रीजी महाराज लक्ष्य हैं–पुरुषोत्तम हैं।** उन्हें पहचानना ही सार का सार है। उसके बिना ज्ञान, वैराग्य सब कुछ निरर्थक है। **जिसने भगवान को निहारा-पहचाना वही ज्ञानी है।**

✣ भगवान स्वामिनारायण गढडा में विराजमान थे। वहाँ एक सत्संगी सेठ उनके दर्शन के लिए आया।

महाराज ने पूछा: *'सेठ! आपके कितने बेटे हैं?'*

सेठ ने कहा: *'महाराज! दो।'*

महाराज ने फिर पूछा: *'संपत्ति कितनी है?'*

सेठ ने कहा: *'पाँच हज़ार।'*

सभा में बैठे एक भक्त ने महाराज से कहा: *'महाराज, सेठ झूठ बोल रहा है। यह तो पचास हज़ार का आसामी है और इसके चार लड़के हैं।'*

महाराज ने सेठ से पूछा: *'सेठ, ये क्या कह रहा है?'*

सेठ ने कहा: *'यह जो कह रहा है, वह बिल्कुल सही बात है। परंतु महाराज, मेरे चार बेटों में से दो बेटे ही सत्संगी हैं, जो आपके संबंध में आए हुए हैं-आपके आश्रित हुए हैं। दूसरे दो तो सत्संग की ओर देखते तक नहीं। सो, उन्हें मैं अपने बेटे नहीं मानता। सो, ये दो सत्संगी लड़के ही मैंने गिनवाए। दूसरी बात, मेरे पास पचास हज़ार की मिल्कत जरूर है, लेकिन धर्मार्थ में मैंने पाँच हज़ार ही दिए हैं और उसे ही मैं अपनी सच्ची संपत्ति मानता हूँ।'*

महाराज सेठ की समझदारी देख कर प्रसन्न हुए। **भगवान के काम में जो-जितना आए, वही सच्चा है।**

यूँ , बापा द्वारा बताई ऐसी अनेकों सत्संग कथाओं द्वारा तत्कालीन मुक्तों को तो सत्संग की सच्ची सूझ मिली ही, साथ ही आज भी इनके द्वारा आश्रितों को आत्मबुद्धि व प्रीति के सत्संग की सही परिभाषा जानने को मिलती है और जो उसे अमल में लाए, वही जीतेजी अक्षरधाम के सुख का भोक्ता बनता है।

ब्रह्मस्वरूप काकाजी महाराज–

* उन्होंने निर्दोषबुद्धि सहित सुहृद्‌भाव का आचरण छोटे से छोटे मुक्त के प्रति रखा।
* योगीबापा को प्रसन्न करने के लिए सभी का मान-अपमान सहते हुए वे सभी में ओतप्रोत हुए और सभी को अपना दिव्य संबंध दिया।
* सभी उन्हें '**निर्दोषबुद्धि के राजा**' कहते हैं; क्योंकि वे स्वयं तो माहात्म्य में डूबे ही रहते, साथ ही सभी

को रखते भी। *‘ये मेरे और वे नहीं; मेरे जो हैं उनकी महिमा और जो नहीं हैं उनकी उपेक्षा, उनके प्रति अरुचि या उनकी अवगणना’* – ऐसी सोच तक उनके अंतर में कभी नहीं रही, तो तौर-तरीके तो कहाँ से होते?

* निरपेक्षभाव से ‘योगी संकल्प’ को साकार करने के लिए उन्होंने **सत्संग में अपना सर्वस्व याहोम कर दिया। ‘गुणातीत समाज’ की प्रत्येक संस्था और केन्द्र का प्रारंभ** करके, उनके विकास **में स्वयं खड़े रहे।** इस गुणातीत बगीचे को सींचा और अपने पैरों पर खड़ा करते ही स्वयं कब खिसक गए, यह भी किसी को ख्याल नहीं पड़ने दिया।

* **‘गुणातीत समाज के आद्य सृजक’** होते हुए भी वे हमेशा **‘लो प्रोफाईल’** ही रहे। उन्होंने कभी भी कहीं अपना नाम आगे नहीं आने दिया और दासत्वभाव से कहते –
  यह सब मेरे गुरुदेव शास्त्रीजी महाराज और योगीजी महाराज के संकल्प से हो रहा है।
  इससे भी अधिक, हमेशा अपने साथीदारों को श्रेय देते हुए वे दिलेरी से अकसर दोहराते –
  यह सब अकेले हाथ नहीं बना। धन्यवाद है मेरे साथीदारों को...
  और... **यहाँ दिखाई पड़ती है ‘सरदार पटेल’ की भाँति छः गाँव के-करमसद के पटेल के ऊँचे खून की ख़ानदानी!**

* गुरुहरि योगीजी महाराज की मूर्ति में ही सदैव निमग्न रहते हुए हर एक को अपने सही लक्ष्य पर अग्रसर करने के लिए वे सतत लगे ही रहे...
  २०१० की जनवरी में हुए ‘मैत्री मिलन महोत्सव’ के उपलक्ष्य में प्रकाशित हुई **‘जेवा में निरख्या रे-२’** पुस्तक में **पू. योगिनी बहन** ने **प.पू. काकाजी द्वारा** ‘विहार लेक’ की शिविर के दौरान **लिखा** एक लेख दिया है। प.पू. काकाजी इसे शिविर की हर सभा में दो या तीन बार पढ़वाते थे। इसे पढ़ कर हमें भी मुफ्त में जो प्राप्ति हुई है, उसका एहसास होगा।

दि. १८.९.७८
विहार लेक, मेईन बंगलो

सर्वोपरि, सर्वोत्तम, बढ़िया चीजें मुफ़्त में...

१. गौतम बुद्ध (भगवान बुद्ध) ने राजपाट, स्त्री-पुत्र छोड़ा; तो भी सत्य दर्शन नहीं हुआ, वो प्रभु और संत हमें वाकई साक्षात् मिल गए न? वो भी मुफ्त में!! तो खुश रहो।

२. भगवान और संत ने जो तै किया होता है, वही होता है। **हमें वे मिले हैं, हम उनसे जुड़े हुए हैं, तो वे हमारा हित ही करेंगे।** वे हितकारी ही हैं, तो जो भय और डर था, वह भी अब निकल गया। परीक्षक ही जब हमारे बाप-मालिक हैं, तो डर कैसा? पास होंगे या फॅईल – ऐसा डर क्यों?

३. सारी दुनिया **मोक्ष** के लिए – आनंद के लिए तरसती है, मुक्ति का मार्ग ढूँढ़ती है। प्रभु ने तो उसके लिए वरदान दिया है न? वो भी मुफ्त में! **आश्रित होने में ही न!**

४. कैसे ही संचित-प्रारब्ध भुगतने ही पड़ते हैं। दुनिया माने न माने, **पर महाराज ने वर्तमान (प्रण-नियम) देकर, संत की सेवा करवा कर, हमारे बुरे प्रारब्ध अच्छे कर दिए न!**

५. अपने संसार को पोसते हुए हम नए 'क्रियामाण' कर्म खड़े करते हैं। फिर भी, २४ घंटे में सुबह-शाम दो घड़ी 'स्वरूपयोग' करने पर अच्छे-बुरे-अशुभ कर्मों के पाप उन्होंने खाक कर दिए और हमें मुक्त किया। दुनिया में कोई मानेगा नहीं, लेकिन **प्रारब्ध और प्रकृति बदलने का** इन्होंने **वरदान दिया है।** दो-चार जनों (मुक्तों) की प्रकृति बदल गई है, तो हमारी भी बदल जाएगी। सो, 'हम, ठाकुर और क्रिया' – इस प्रकार एक-दो जनों के साथ मिल कर लग पड़ना।

६. **संसार और जगत केवल स्वार्थ पर टिके हैं। सगे-संबंधिओं का सभी को अनुभव होगा, फिर भी उनका मोह रहता है** – उनमें आसक्ति रहती है। **वे हमें परेशान करते हैं, तब भी कितनी अधिक आसक्ति रहती है?** जबकि **यहाँ दिव्य संत, दिव्य समाज, दिव्य मुक्त, हरिभक्त** हमें मुफ्त में मिले हैं। वे **हमारे सुख-दुःख में काम आते हैं, वे हमारे लिए प्रार्थना करते हैं, हमारा पक्ष रखते हैं** – ऐसे पुरुषों के संबंध में हम हैं – यह हमारा कितना बड़ा भाग्य!

७. 'आख़िरी जन्म, वासना का क्षय और स्वभाव का परिवर्तन' की बातें तो सभी करते हैं, जबकि यहाँ आत्यंतिक कल्याण बख़्शिश में दिया। जेतलपुर की वेश्या, वालेरा वरु, जूनागढ़ का मुसलमान... ऐसे अनेकों दृष्टांत हैं। कैसी भव्य प्राप्ति! **लाखों-करोड़ों वर्ष के बाद भी जो करना ही पड़े, वह मुफ़्त में करवाते हैं।** केवल 'धन्यवाद' देने के सिवा कुछ कह नहीं सकते, केवल गुण ही लें... गुण ही लें...

८. अमदावाद-१ वचनामृत के मुताबिक-निष्ठा वाले को 'सिद्धदशा' तुरंत प्राप्त होती है। **भुक्ति और मुक्ति और भगवदी का प्रसंग करते हुए आख़िरकार 'जीवन मुक्ति' जीतेजी** प्राप्त होती है।

९. **मुक्तों को भी** दुर्लभ – ऐसा **दुर्लभ से दुर्लभ 'एकांतिकभाव'** सिद्ध होता है। **समग्र सत्संग को दिव्य मान कर वर्तें, तो** शांति-सुख और... **काल-कर्म-माया का हम पर प्रभाव ही नहीं!** इस प्राप्ति का सुबह-शाम विचार करो, फिर जो दुःख हो, उसकी वजह लिखो।

हमारी ग़मगीनी...

१. हमारी खुद की खड़ी की हुई है?

२. भूतकाल की है?

३. विरासत में मिली है?

४. मान्यता की है या भविष्य की है?

मन को है या तुम्हारे मूल स्वरूप को-आत्मा को है? चेतना को है?

यह ग़मगीनी किस वजह से है?

यह ग़मगीनी, दुःख, परेशानी किसे है?

अब जो भी दुःख हो, वह लिखो।

सच, पू. योगिनी बहन को खूब-खूब धन्यवाद कि ऐसा मार्मिक रहस्य सभी के लिए प्रकट किया। इसे पढ़ कर जाग्रत मुमुक्षु को अंतर में कहीं न कहीं तो चोट अवश्य लगेगी ही कि ऐसी भव्य प्राप्ति होने के बावजूद भी हम अपने मन के शिकंजे से बाहर नहीं आते। तो, किसी भी तरह अपनी यह कसर टालने के लिए गद्गद् हृदय से प्रार्थना करने लग जाएं – यही हमें मिली दिव्य-प्रत्यक्ष विभूतियों के श्रीचरणों में प्रार्थना!

✡✡✡

‘योगी परिवार का अद्‌भुत सर्जन..... प.पू. काकाजी की सौरभ!’

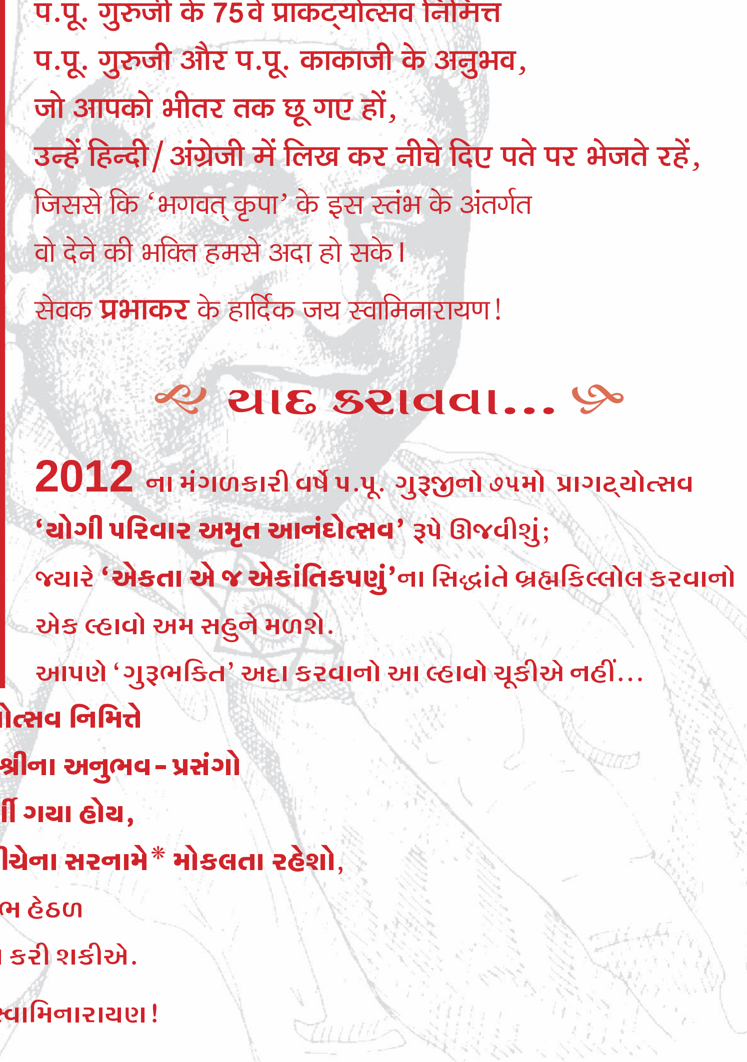

यान्द कराने...

2012 के मंगलमयी वर्ष में प.पू. गुरुजी का 75 वां प्राकट्योत्सव
‘योगी परिवार अमृत आनंदोत्सव’ के रूप में मनाएंगे;
जब **‘एकता ही एकांतिकभाव’** के सिद्धांत से ब्रह्मकिल्लोल करने का
एक अनमोल मौका हम सभी को मिलेगा।
सो, हम ‘गुरुभक्ति’ अदा करने का यह मौका न चूकें...
प.पू. गुरुजी के 75वें प्राकट्योत्सव निमित्त
प.पू. गुरुजी और प.पू. काकाजी के अनुभव,
जो आपको भीतर तक छू गए हों,
उन्हें हिन्दी / अंग्रेजी में लिख कर नीचे दिए पते पर भेजते रहें,
जिससे कि ‘भगवत् कृपा’ के इस स्तंभ के अंतर्गत
वो देने की भक्ति हमसे अदा हो सके।

सेवक **प्रभाकर** के हार्दिक जय स्वामिनारायण!

યાદ કરાવવા...

2012 ના મંગળકારી વર્ષે પ.પૂ. ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ
‘યોગી પરિવાર અમૃત આનંદોત્સવ’ રૂપે ઊજવીશું;
જ્યારે **‘એકતા એ જ એકાંતિકપણું’**ના સિદ્ધાંતે બ્રહ્મકિલ્લોલ કરવાનો
એક લ્હાવો અમ સહુને મળશે.
આપણે ‘ગુરૂભક્તિ’ અદા કરવાનો આ લ્હાવો ચૂકીએ નહીં...
પ.પૂ. ગુરૂજીના ૭૫મા પ્રાકટ્યોત્સવ નિમિત્તે
પ.પૂ. ગુરૂજી અને પ.પૂ. કાકાશ્રીના અનુભવ-પ્રસંગો
જે આપને અંતરતમ સુધી સ્પર્શી ગયા હોય,
એ ભલે ગુજરાતીમાં લખીને નીચેના સરનામે* મોકલતા રહેશો,
જેથી ‘ભગવત્ કૃપા’ના આ સ્તંભ હેઠળ
એ આપવાની અમે ભક્તિ અદા કરી શકીએ.

સેવક **પ્રભાકર**ના હાર્દિક જય સ્વામિનારાયણ!

---

*प.भ. प्रभाकर राव / प.पू. आनंदी दीदी C/o ‘भगवत् कृपा’
श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर, ‘ताड़देव’, काकाजी लेन, स्वामिनारायण मार्ग, अशोकविहार - III, दिल्ली – 110 052
❋ फोन – 4709 1281, 2730 1327 ❋ फॅक्स: 4709 1280 ❋ ई मेईल – taaddev@ydsd.org, aksharjyoti@ydsd.org

પૂ. કાકાજી–પૂ. પપ્પાજી મહારાજની જય!

सौरभ - १२

પૂ. કાકાજીના દર્શન કરવાનાં ભાગ્ય ત્રણેક વાર થયાં હતાં. પહેલી વાર ૧૯૭૮માં મુંબઈના સમ્મુખાનંદ હૉલમાં એમની હીરકજયંતી ઉજવાતી હતી ત્યારે. હું ને મારાં બેન જરા મોડા પડયા હતાં. હૉલ આખો ભરાયેલો હતો. સામે સ્ટેજ ઉપર પૂ. કાકાજી બિરાજમાન હતાં. દરવાજામાંથી અમે જેવાં પ્રવેશ થયાં, સામે પૂ. કાકાજીની ઉપર મારી પહેલી દૃષ્ટિ પડી. **તેમની જાજ્વલ્યમાન મૂર્તિના દર્શન કરી પૃથ્વી ઉપર કોઈ દિવ્ય પુરૂષની ચેતનાનો અંતરમાં પહેલી જ વાર અનુભવ થયો; જાણે મનુષ્યરૂપે પ્રભુદર્શનનો લ્હાવો લઈ રહી છું!**

આમ તો હું મૂર્તિપૂજક એટલે મંદિરોમાં જતી. પણ **પ્રગટ પ્રભુના દિવ્યદર્શનની અનુભૂતિ** કંઈક જુદી જ લાગી!

એવા પૂ. કાકાજીની પ્રતિછાયારૂપ પૂ. ગુરૂજી! પૂ. મંજુલાબેન પાવાગઢીની દીકરી પૂ. હંસા ઇ.સ. ૧૯૮૦માં ભગવાન ભજવા 'જ્યોત'માં જતી હતી. એનો વિદાય સમારંભ રખાયો હતો, ત્યારે પૂ. ગુરૂજીના પ્રથમ દર્શન થયેલા. એ-૧૦૩માં પૂ. ગુરૂજી બ્હાર વરંડામાં ઊભા હતા. સામે જ્યાં ટૅન્ટ બાંધ્યો હતો, ત્યાં અમે હરિભક્તો ઊભા હતાં. જમવાની વ્યવસ્થા પણ ત્યાં હતી. હું ને સંઘવી ગયા હતાં. **પૂ. ગુરૂજીના આ દર્શન પહેલી વાર થયાં. મારૂં મન વળી વળીને એમના દર્શન માટે ત્યાં દોડતું હતું. પરિચય બિલકુલ નહીં, છતાં આમ કેમ? એ જ બતાવે છે કે પૂ. કાકાજી જેવા જ પૂ. ગુરૂજી પ્રતિભાશાળી સંત છે.**

તે પછી ૧૯૮૧ સુધી એ-૧૦૩માં અન્નકોટ કે એવા કોઈ પ્રસંગે જવાનું થતું. પણ, ૧૯૮૧માં શ્રીજી મહારાજની દ્વિશતાબ્દી વખતે **પૂ. પપ્પાજી**નો અનુભવ દિલ્હીમાં થયો. ૧૯૮૧ થી ૮૫ સુધી ઘરની વિકટ પરિસ્થિતિમાંથી પાર ઉતારવાની તેમની પારદર્શિતાનો અનુભવ થયો. એટલે પૂ. પપ્પાજી અને 'જ્યોત'નું આકર્ષણ વધ્યું. અમે વર્ષમાં એકાદ વાર 'જ્યોત'માં જવા લાગ્યાં.

આ બાજુ મારા દીકરા પ્રમીતને પૂ. ગુરૂજીનો જોગ થયો. નોકરી હતી નહીં, ટેન્શનમાં રહેતો. એ ગાળામાં એક હરિભક્તના દીકરા સાથે મંદિરમાં જવાનો એને ચાન્સ મળ્યો ને પૂ. ગુરૂજીના આશીર્વાદથી સારી નોકરી ને ગાડી મળ્યાં. તેને પણ પૂ. ગુરૂજીમાં આત્મશ્રદ્ધા વધી. અવાર-નવાર જવા લાગ્યો.

મોટા સમૈયામાં અમે બન્ને પણ જતાં. પણ, **પૂ. ગુરૂજીને 'ગુરૂ' કેમ મનાય? એમ અંતરમાં દ્વિધા રહેતી** અને બુદ્ધિ તર્ક કરે કે *'મારા સાચા ગુરૂ પૂ. પપ્પાજી ને પૂ. જશુબેન, તેમણે મને વર્તમાન ધરાવ્યાં. હું મારી જાતને જ્યોતની માનવા લાગી; પણ મારે જવાનું અહીંના મંદિરમાં!'* એક વખત મારી એ મૂંઝવણ કાઢવા માટે પૂ. પપ્પાજીએ સ્વપ્નમાં અનુભવ કરાવ્યો. જાણે પૂ. ગુરૂજીમાં પ્રવેશ કરી તેઓ બોલતા હોય તેવું લાગ્યું. પૂ. ગુરૂજી સંત એટલે પાસે તો જવાય નહીં. તે રાત્રે સ્વપ્નમાં

પૂ. ગુરૂજી દૂર ઊભા રહી મને કહે– *'હું જ પપ્પાજી છું, શું કામ અચકાવ છો ?'* એટલું કહી અદશ્ય થયા. મને સવારે ઊઠી એજ દશ્ય યાદ આવ્યું. આમ મનમાં પૂ. પપ્પાજીએ દઢ પ્રતીતિ કરાવી કે *'હું, પૂ. કાકાજી ને પૂ. ગુરૂજી જુદા નથી.'*

પછી તો મંદિરના ફંકશનોમાં અવાર-નવાર આવવાનું થતું, પણ સભામાં હાજરી આપી પાછાં ઘરે આવતાં. પૂ. ગુરૂજીનો પ્રત્યક્ષ અનુભવ :

✳ ૨૦૦૪માં સંઘવી સાહેબને એટેક આવ્યો ને મહીનો ઍપોલો હૉસ્પિટલમાં રાખ્યા. ત્યારે લગભગ રોજ સાંજે આઠ-દસ મુક્તો સાથે પૂ. ગુરૂજી ચા-નાસ્તો લઈને આવે ને લગભગ પંદરેક જણનું રાતનું ડીનર મોકલાવે. અમે તો એટલા 'આત્મીય' પણ નો'તા. એક મિત્ર પણ આટલો ઘસારો આટલી દૂરથી આવીને ન કરી શકે. ત્યારે મને પૂ. ગુરૂજીનો નિર્માની, નિરપેક્ષ ને સહૃદયી હોવાનો અનુભવ થયો!

✳ ૨૦૦૮માં મારા પગનું ઑપરેશન થયું. બન્ને દીકરાઓના ઘર ત્રીજે માળે. અઠવાડિયું હૉસ્પિટલમાં હતી. પૂ. ગુરૂજી રાત્રે રોકાવા સેવિકા મોકલતા. પૂ. દીદી ને બેનો પણ લગભગ રોજ ખબર કાઢવા આવતાં. પૂ. દીદીની આજ્ઞાથી મને હૉસ્પિટલથી સીધા 'અક્ષરજ્યોતિ'માં રહેવા લઈ ગયા. 'મારે દસેક દિવસ રહેવું'– એમ નક્કી થયું હતું. પણ, પૂ. દીદીએ મને પૂરો દોઢ મહીનો રાખી સેવા કરાવી ખૂબ જ ભીડો વેઠયો. તે પ્રસંગ ભૂલ્યો ભૂલાય તેવો નથી. બેનો ને સેવિકાઓએ જે આત્મીયતા અને પોતાપણાથી સેવા કરી એનો જિંદગીમાં પહેલી વાર અહેસાસ થયો કે આવા પ્રસંગે સગાં પણ આટલી હૂંફ ન આપી શકત. **પૂ. ગુરૂજીના સંકલ્પે હું જલ્દી સારી થઈ તે પણ એક આશ્ચર્ય છે !**

આમ તો પૂ. ગુરૂજીની પ્રતિભાને પાર પામવી બહુ અકલ્પ્ય વાત છે. ૧૯૯૮માં અમારાં ફૅમીલીને મંદિરે બોલાવી એક દીકરા તરીકે મેમ્બર બન્યા ને ઍડૉપ્શન વિધિ કરાવી. ત્યારે મને બહુ આશ્ચર્ય થયેલું કે આવું પણ હોતું હશે ? પણ, પૂ. ગુરૂજીના આવા સંબંધમાં આવ્યા પછી અને આશ્ચર્યજનક અનુભવો થયા પછી સમજાય છે કે ખરો સંબંધ તો સાચા સંત સાથેનો જ છે-જે ભવોભવ સાથે રહેવાનો છે.

અંતમાં એટલું જ કહીને વિરમું છું કે **પૂ. ગુરૂજી એટલે એક** –

❋ સર્વદેશીય,

❋ ઉદાર,

❋ કૃપાળુ,

❋ ભક્તવત્સલ,

❋ અંતર્યામી,

- શૂરવીર,
- વિચક્ષણ,
- સત્સંગની ચીલાચાલુ રીતિઓથી કંઈક જુદું કરવાવાળા,
- પૂ. કાકાજી પ્રત્યેની અગાધ શ્રદ્ધાનું નીતરતું અસ્ખલિત ઝરણું,

એક સાચા ગુણાતીત સાધુ હોવા છતાં–

- સમાજ સુધારક,
- આનંદી,
- મોજીલા સ્વભાવના,
- ભક્તોને લાડ લડાવનાર,

  ઇશ્વરીય શક્તિથી ભરપૂર હોવા છતાં છૂપા રહી –
- એઓ એક ગરજૂ ને સરળ સેવક તરીકે રહે છે

  ને...

  તેમની આ જ ચુંબકીય શક્તિનો અનુભવ કરાવી ભક્તોને ખેંચી લાવે છે!

– પૂ. હંસાદાદી સંઘવી, દિલ્હી

[हिन्दी अनुवाद]

पू. काकाजी–पू. पप्पाजी महाराज की जय!

पू. काकाजी के दर्शन करने का सौभाग्य तीन-चार बार प्राप्त हुआ था। पहली बार तो १९७८ में मुंबई के षण्मुखानंद हॉल में जब उनकी हीरक जयंती मना रहे थे, तब। मैं और मेरी बहन थोड़ी देर से पहुँचे थे। सारा हॉल खचाखच भरा हुआ था। सामने स्टेज पर पू. काकाजी विराजमान थे। दरवाजे से हमने जैसे ही प्रवेश किया, तो सामने पू. काकाजी के ऊपर मेरी नज़र पड़ी। **उनकी जाज्वल्यमान मूर्ति के दर्शन करने पर पृथ्वी के ऊपर किसी दिव्य पुरुष की चेतना का अंतर में पहली ही बार अनुभव हुआ; मानो मनुष्य रूप में प्रभुदर्शन का आनंद ले रही थी!**

यूँ तो मैं मूर्तिपूजक हूँ, सो मंदिरों में जाती थी। लेकिन **प्रगट प्रभु के दिव्यदर्शन की अनुभूति** कुछ अलग ही लगी!

ऐसे पू. काकाजी की प्रतिछाया रूप हैं पू. गुरुजी! पू. मंजुलाबेन पावागढ़ी की बेटी पू. हंसा ई.स. १९८० में भगवान भजने 'ज्योत' में जा रही थी। उसके विदाई समारोह के अवसर पर पू. गुरुजी के पहली बार दर्शन हुए थे। ए-१०३ में पू. गुरुजी बाहर बेड़े में खड़े थे। सामने पार्क में जहाँ टॅन्ट बांधा हुआ था, वहाँ हम सभी हरिभक्त खड़े थे। भोजन की व्यवस्था भी वहीं थी। मैं और संघवी साहेब गए थे। **पू. गुरुजी के ये दर्शन**

पहली बार हुए। मेरा मन बार-बार उनके दर्शन के लिए मुड़-मुड़ कर लालायित हो रहा था। परिचय बिल्कुल नहीं, फिर भी ऐसा क्यों ? यही दर्शाता है कि पू. गुरुजी भी पू. काकाजी जैसे ही प्रतिभाशाली संत हैं।

उसके बाद १९८१ तक ए-१०३ में अन्नकूट या ऐसे किसी प्रसंग पर जाना रहता था। लेकिन, १९८१ में श्रीजी महाराज की द्विशताब्दी के समय **पू. पप्पाजी** का अनुभव दिल्ली में हुआ। १९८१ से ८५ तक घर की विकट परिस्थिति में से पार उतारने की उनकी पारदर्शिता का अनुभव हुआ। सो, पू. पप्पाजी और 'ज्योत' का आकर्षण बढ़ा। वर्ष में एकाध बार हम 'ज्योत' में जाने लगे।

इस ओर, मेरे बेटे प्रमीत को पू. गुरुजी का जोग हुआ। नौकरी थी नहीं, टेन्शन में रहता था। इस दौरान एक हरिभक्त के बेटे के साथ मंदिर में जाने का उसे मौका मिला और पू. गुरुजी के आशीर्वाद से उसे अच्छी नौकरी और गाड़ी मिली। उसकी भी पू. गुरुजी के प्रति आत्मश्रद्धा बढ़ी और वह भी कभी-कभार मंदिर जाने लगा।

बड़े उत्सवों में हम दोनों भी जाते। लेकिन, **पू. गुरुजी को 'गुरु' कैसे मानें ? ऐसी अंतर में दुविधा रहती** और बुद्धि तर्क करती कि *'मेरे सच्चे गुरु पू. पप्पाजी और पू. जशु बहन हैं, जिन्होंने मुझे वर्तमान (प्रण-नियम) धराया है। मैं अपने आपको ज्योत की मानने लगी हूँ; लेकिन, मेरा आना-जाना तो इस मंदिर में है!'* एक बार मेरी इसी परेशानी को टालने के लिए पू. पप्पाजी ने स्वप्न में अनुभव करवाया। मानो पू. गुरुजी में प्रवेश करके वे ही बोल रहे हों – ऐसा लगा। पू. गुरुजी ठहरे संत, इसलिए उनके पास तो जा नहीं सकते। सो, उस रात को स्वप्न में दूर खड़े रह कर पू. गुरुजी ने मुझे कहा – *'मैं ही पप्पाजी हूँ, क्यों हिचकते हो ?'* इतना कह कर वे अदृश्य हो गए। सुबह उठ कर मुझे वही दृश्य याद आया। यूँ, पू. पप्पाजी ने मन में दृढ़ प्रतीति करवा दी कि *'मैं, पू. काकाजी और पू. गुरुजी अलग नहीं हैं।'*

फिर तो मंदिर के उत्सवों में आना-जाना होता रहा, लेकिन सभा में हाज़िरी देकर घर लौट जाते। पू. गुरुजी का प्रत्यक्ष अनुभव :

* २००४ में संघवी साहेब को एटेक आया और वे महीनाभर ऑपोलो हॉस्पिटल में दाखिल रहे। तब तकरीबन रोज सायं आठ-दस मुक्तों के साथ पू. गुरुजी चाय-नाश्ता लेकर आते और करीब पंद्रह जनों के लिए रात का भोजन भेजते। हम तो इतने 'आत्मीय' भी नहीं थे। एक मित्र भी इतना परिश्रम इतनी दूर से आकर नहीं कर पाएगा। तब मुझे पू. गुरुजी के निर्मानी, निरपेक्ष और सहृदयी होने का अनुभव हुआ!
* २००८ में मेरे घुटने का ऑपरेशन हुआ। दोनों बेटों का घर तीसरी मंज़िल पर है। एक सप्ताह हॉस्पिटल में रही। पू. गुरुजी रात को रुकने के लिए सेविका भेजते। पू. दीदी और बहनें भी तकरीबन रोज तबियत पूछने आतीं। पू. दीदी की आज्ञा से मुझे हॉस्पिटल से सीधा 'अक्षरज्योति' में रहने के लिए लाया गया। 'मुझे दस-एक दिन ही रहना है' – ऐसा तै हुआ था। लेकिन, पू. दीदी ने मुझे पूरा डेढ़ महीना रख कर सेवा करवा कर बहुत परिश्रम उठाया। यह प्रसंग भूला सकूँ ऐसा नहीं है। बहनों और सेविकाओं ने भी

जिस आत्मीयता और अपनेपन से सेवा की – जिंदगी में पहली बार एहसास हुआ कि ऐसे प्रसंग पर सगे भी इतनी सपोर्ट नहीं दे सकते। **पू. गुरुजी के संकल्प से मैं जल्दी अच्छी हो गई – यह भी एक आश्चर्य है!**

यूँ तो पू. गुरुजी की प्रतिभा का पार पाना सोच से परे की बात है। १९९८ में हमारी फॅमीली को मंदिर में बुला कर एक बेटे के रूप में वे हमारी फॅमिली के मेम्बर बने और ऍडॉप्शन विधि करवाई। तब मुझे बहुत आश्चर्य हुआ था कि क्या ऐसा भी होता होगा? लेकिन, पू. गुरुजी के ऐसे संबंध में आने के बाद और आश्चर्यजनक अनुभव होने के बाद समझ में आता है कि सच्चा संबंध तो सच्चे संत के साथ का ही है – जो भव-भव साथ रहने वाला है।

अंत में इतना ही कह कर विराम लेती हूँ कि **पू. गुरुजी यानि एक** –

- सर्वदेशीय,
- उदार,
- कृपालु,
- भक्तवत्सल,
- अंतर्यामी,
- शूरवीर,
- विचक्षण,
- सत्संग की भेड़चाल – रूढ़िगत रीतियों से कुछ अलग ही करने वाले,
- पू. काकाजी के प्रति की अगाध श्रद्धा का निरंतर अखंड झरना,

एक सच्चे गुणातीत साधु होने के बावजूद –

- समाज सुधारक,
- आनंदी,
- मोजीले स्वभाव के,
- भक्तों को लाड़ लड़ाने वाले,

ईश्वरीय शक्ति से भरपूर होने के बावजूद छुपे रह कर –

- वे एक गरजू और सरल सेवक की भाँति रहते हैं

और...

अपनी इसी चुंबकीय शक्ति का अनुभव करवा कर भक्तों को खींच लेते हैं!

– पू. हंसादादी संघवी, दिल्ली

सौरभ - १३

जय स्वामिनारायण!

दिल्ली मंदिर से जुड़ने के बाद कई बार एक भजन में सुना है –

'प्रभु गरजु बन कर खुद सामने से मिले और हमें अपनाया...'

मेरे साथ भी कुछ ऐसा ही हुआ है। जीवन में न तो कोई विशेष पूजा-पाठ ही किया, न ही कभी बहुत मंदिरों में जाना-आना या व्रत इत्यादि किया। ऐसा भी नहीं कि बिल्कुल नास्तिक ही थी, लेकिन धार्मिक रीति-रिवाजों से बंधी हुई भी नहीं थी।

पर, प.भ. कीर्तिभाई जानी, जो कि कॅमिकल के बिज़नेस के कारण, मेरे पति पुनीतजी से परिचित थे; उनके व उनकी पत्नी सौ. शोभनाभाभी के द्वारा पानीपत में स्व. श्री शमीम साहेब के यहाँ प.पू. गुरुजी के पहली बार दर्शन हुए। और... प.पू. गुरुजी से मिलने के बाद और कोई भी प्रभाव जीवन में रहा नहीं। यह भी प.पू. गुरुजी की एक ब्लेसिंग ही है। सत्संग से जुड़े आज चौदह साल हो गए हैं। शुरुआत में ही प.पू. गुरुजी ने – *'शनिवार-रविवार की सत्संग सभा में आना'* – ऐसा नियम दे दिया था। सो, जगत का सोशियल सर्कल कब खत्म हो गया, पता ही नहीं चला और 'जीवन का केन्द्र' प.पू. गुरुजी व सत्संग ही बन गया! प.पू. गुरुजी हमारे 'जीवन का केन्द्र' ही नहीं, बल्कि वे तो हमारे जीवन के हर एक छोटे-बड़े प्रसंग में, निजी तौर पर स्वयं हमारे लेवल पर आकर सहयोगी बनते हैं...

* करीबन सात साल पहले मैं घर पर स्टेन्ड से गिर गई थी, जिसके कारण मेरे दोनों पैरों में फ्रॅक्चर हो गया था। एक ही पल में मैं बिस्तर पर आ गई और दर्द इतना कि अपने आप तो उठ भी न सकूँ। मेरे पति पुनीतजी के द्वारा जैसे ही प.पू. गुरुजी को यह बात पता चली, तो उन्होंने उसी दिन प.पू. दीदी और बहनों को पानीपत भेजा। उनके साथ मेरे लिए व्हील चॅर, बैसाखी, कमर के सहारे पर बैठने के लिए मोटी गद्दी इत्यादि सामान भी भेजा। इसके अलावा हड्डियों के लिए फायदेमंद ड्रमसीक्स और हरे नारियल का पानी प.पू. गुरुजी पूरे महीने दिल्ली से भिजवाते रहे। हर दो-तीन दिन में कोई न कोई हरिभक्त मेरा हालचाल पूछने दिल्ली से पानीपत आता। इतना ही नहीं उन हरिभक्तों के साथ प.पू. गुरुजी सिर्फ उनका ही नहीं, बल्कि हमारे घर के सदस्यों के लिए भी खाना भिजवाते, ताकि घर में किसी पर लोड न पड़े। **इतनी दूर की सोच!** पूरा महीना कैसे निकल गया, यह पता ही नहीं चला!
* प.पू. गुरुजी कुछ हरिभक्तों को लेकर अमृतसर जाने वाले थे। उन्होंने कहलवाया – पुनीतजी भी फॅमीली के साथ चलें। तब मेरा प्लास्टर खुले सिर्फ एक ही दिन हुआ था और मूवमॅन्ट भी प्रॉपर नहीं हुई थी। मुझे लगा, कैसे होगा? पर, प.पू. गुरुजी को 'ना' करने का भी मन नहीं हो रहा था। सो, हम भी प.पू. गुरुजी के साथ अमृतसर गए। हार्ट का ऑपरेशन होने के कारण प.पू. गुरुजी को दूर तक चलने से स्ट्रेईन न पड़े, इसलिए वाघा बॉर्डर देखने जाने के हेतु से उनके लिए व्हील चॅर की व्यवस्था की हुई थी। हुआ भी यही, वाघा बॉर्डर पर कार पार्किंग से अंदर जाने के लिए काफी चलना पड़ता था, सो सेवकों ने व्हील चॅर

निकाली। परंतु प.पू. गुरुजी खुद उस पर नहीं बैठे और वह मेरे लिए भिजवाई! पूरे ट्रिप में मुझे खड़ा ही नहीं रहने दिया और हरिभक्तों द्वारा खूब ध्यान रखवाया। तब मुझे एहसास हुआ कि **उनके प्रति जो भक्ति हमें करनी चाहिए, वह तो प.पू. गुरुजी हमारे लिए कर रहे हैं।**

* एक दिन शाम को छः-साढ़े-छः बजे अचानक प.पू. गुरुजी का फोन आया और पुनीतजी को कहा कि हम दो गाड़ियों में पानीपत आ रहे हैं, कढ़ी-खिचड़ी बनवा कर रखना। यह सुन कर मुझे हैरानी हुई कि अचानक कैसे? पर, यह सब सोच छोड़ कर हम व्यवस्था करने में जुट गए। प.पू. गुरुजी रात को आठ बजे के करीब पहुँच गए और आते ही आधा घंटा धुन करवाई। फिर खाना खाया और मुझे कहलवाया – अंजलि से कहो कि वो हम सबके साथ दिल्ली मंदिर चले। मेरी तबियत उस दिन कुछ ठीक नहीं थी, सो मैंने मना करा। लेकिन प.पू. गुरुजी ने दोबारा कहलवाया, तो मैंने बेमन से 'हाँ' कर दी। हैरानी की बात है कि दिल्ली से ही प.पू. गुरुजी बहनों की गाड़ी में एक सीट भी खाली रखवा कर लाए थे। वर्ना, हम सभी जानते हैं कि कहीं भी जाना हो तो मंदिर की गाड़ी अधिकतर ओवर लोडेड ही होती है। रात को करीब ग्यारह-साढ़े ग्यारह बजे हम मंदिर पहुँच गए और अक्षरज्योति जाकर मैं तो तुरंत सो गई। सुबह करीब आठ बजे पुनीतजी का फोन आया कि रात को घर में चोर आ गए थे। पर, घर में बहुत बचाव हो गया है। **तब एहसास हुआ कि मुझे वहाँ से यूँ जबरदस्ती दिल्ली ले आकर मालूम नहीं मेरा कौन-सा प्रारब्ध प.पू. गुरुजी ने यूँ टाल दिया था!** मेरी सास सत्संग में कम आती हैं, पर वे भी बोलीं कि यह तो प.पू. गुरुजी हमारी 'रक्षा' करने ही आए थे! सच, जैसा कि प.पू. गुरुजी अकसर कहते हैं कि **साधु प्रभु की प्रेरणा से ही किसी को कुछ आज्ञा करता है,** उसका यह हुबहु दर्शन था।

* प.पू. दीदी की आज्ञा से पू. राकेशभाई ने नई 'देवदास' मूवी के गाने के राग पर एक भजन बनाया था–'भीगा रे, भीगा... काकाजी के रंग में, गुरुजी के संग में...'। वह भजन रॅकार्ड हुआ और उसकी छोटी 'सी डी' रीलीज़ हुई। पुनीतजी को यह भजन बहुत पसंद आया और घर पर भी वे इसे सुनते थे। एक दिन मंदिर में हम बैठे थे और भजन की बात चली, तो मैंने प.पू. गुरुजी को कहलवाया कि पुनीतजी को यह भजन बहुत पसंद है। यह सुनते ही प.पू. गुरुजी ने सेवक को कहा–एक 'सी डी' और दे दो, ताकि कार में ऑफिस जाते हुए भी वो सुन सके। सहज ही मज़ाक में मैंने कहलवाया कि फिर तो 'सी डी' प्लेयर भी देना पड़ेगा, क्योंकि पुनीतजी की कार में वह नहीं है। प.पू. गुरुजी ने तुरंत ही पुनीतजी की कार भेज कर उसमें प्लेयर लगवा दिया। **जगत में ऐसा विशाल हृदय न देखा, न सुना है!** पर, इस बात का रहस्य प.पू. दीदी ने समझाया कि, **आत्मबुद्धि व प्रीति से जुड़े भक्तों के लिए कोई रिझर्वेशन्स न रखने के लिए प.पू. काकाजी द्वारा प.पू. गुरुजी से जो कहा गया है, उसे उन्होंने दिल की सच्चाई से जो पकड़े रखा है–उसका दर्शन है।**

* मेरे बड़े बेटे वैभव को २००९ में बारहवीं कक्षा के पेपर देने थे। मुझे काफी चिंता रहती थी कि यदि

परसॅन्टेज अच्छी नहीं आई, तो आगे एडमीशन मिलना मुश्किल होगा। उसके फाईनल एग्ज़ाम्स से पहले प.पू. गुरुजी अचानक पानीपत आए। उन्होंने अंतर्यामी रूप से कहा–वैभव की अच्छी परसॅन्टेज के लिए सब धुन करो और आधा घंटा धुन करवाई। पेपर्स के दौरान प.पू. गुरुजी दोबारा एक बार आए, जबकि इतने कम समय के अंतराल में पानीपत का प्रोग्राम बनता नहीं है।

वैभव का रिज़ल्ट आया और उसके ९२.५ प्रतिशत मार्क्स आए। इस पर प.पू. गुरुजी खूब राजी हुए और सभी हरिभक्त भी ऐसे गौरांवित हुए, मानो उनके परिवार का नाम उनके किसी अपने ने रोशन किया हो। **हम माँ-बाप होकर जो नहीं कर सकते, वो प.पू. गुरुजी बिना कहे कर देते हैं।**

* मुझे अपने फाधर के साथ बहुत एटॅचमेन्ट है। उन्हें हार्ट की तकलीफ तो बहुत सालों से है। दो साल पहले एक दिन शाम को मेरे भाई–आशिष का फोन आया कि पापा को माइनॉर एटॅक आया था, सो वो अस्पताल में हैं; लेकिन चिंता की कोई बात नहीं, सब ठीक है। मेरा मन तो बेचैन हो गया था, पर आशिष की बात से लगा था कि ठीक हो जाएगा; परंतु रात को नौ बजे आशिष का रोते हुए फोन आया कि दीदी, पापा ठीक नहीं हैं। उन्हें दोबारा एटॅक आया है और मोगा में डॉक्टर ने जवाब दे दिया है। सो, एमब्युलेन्स में लुधियाना ले जा रहे हैं। यह सुन कर तो मानो पैरों के नीचे से जमीन खिसक गई हो, ऐसा लगा। मेरा रोना थम ही नहीं रहा था। मैंने फोन करके प.पू. दीदी द्वारा सेवक से प.पू. गुरुजी को कहलवाया। प.पू. गुरुजी ने भी कहलवाया कि तुम अभी रात को ही लुधियाना के लिए निकल जाओ। यह सुन कर तो दिल और बैठ गया कि प.पू. गुरुजी यह क्या हिन्ट दे रहे हैं? मैंने इतना भजन किया कि 'गुरुजी, अभी नहीं, मेरे पापा मुझे चाहिएँ।' **नाभि का भजन क्या होता है और कैसे करना चाहिए, यह मुझे उस दिन पता चला।** लगातार आशिष से भी बात हो रही थी। आधे मिनिट के बाद ही पुनीतजी के पास प.पू. गुरुजी का फोन आया कि सुबह आराम से चले जाना, पापा ठीक हैं। इतने में मोगा से फोन आया कि पापा स्टेबल हैं! कैसा चमत्कार! पापा को लुधियाना शिफ्ट कर दिया और उन्हें पेस-मेकर लगा। मैं और पुनीतजी वहाँ चले भी गए। वो सारा कठिन समय, मानो 'काल' आकर वापिस चला गया। प.पू. गुरुजी स्वयं भी पापा को अस्पताल में देखने के लिए सुबह लुधियाना जाकर शाम को दिल्ली वापिस भी आ गए। सच में, **प.पू. गुरुजी ने अपने जीवन में भक्तों से अधिक 'प्रिय' कुछ भी नहीं रखा।**

* यह तब की बात है, जब मेरे दोनों बेटे वैभव-ऋषभ मसूरी बोर्डिंग में पढ़ते थे। अभी उनको गए सालभर ही हुआ था। २५ सितंबर को वैभव का जन्मदिन आया, तो कुछ कारणवश हम मसूरी नहीं जा पाए। मन बहुत उदास व बेचैन था। सुबह ११:०० बजे के करीब बर्थ-डे विश करने के लिए पुनीतजी के पास प.पू. गुरुजी का फोन आया। प.पू. गुरुजी को ऐसा लगा कि हम मसूरी जाने के रास्ते में हैं। सो, जब पुनीतजी प.पू. गुरुजी से बात कर रहे थे, तो मैंने पीछे से पुनीतजी को कहा कि *गुरुजी को बोलो कि आप आ जाओ।* प.पू. गुरुजी ने पुनीतजी से पूछा–अंजलि क्या कहलवा रही है? पुनीतजी ने कहा–कुछ नहीं; बच्चों के न होने से परेशान है, इसलिए आपको (पानीपत) आने के लिए कहलवा रही है। उस दिन मंदिर

में शाम को बड़ी सभा थी। हम लोग भी जाने वाले थे। पंद्रह मिनिट के बाद प.पू. गुरुजी का फोन आया कि मैं पानीपत आ रहा हूँ, खाना बनवाना। हाँलाकि पुनीतजी ने मना भी किया, पर प.पू. गुरुजी ने कहा– आपके यहाँ से कोई कुछ कहलवाए और मैं न करूँ, ऐसा हो सकता है क्या? प.पू. गुरुजी एक ही कार लेकर आए और सिर्फ एक घंटा रुके। आराम भी नहीं किया और सीधा दिल्ली मंदिर सभा में ही पहुँचे! कैसे **वे हमारी छोटी से छोटी बात भी गिरने नहीं देते?** और... अपनी देह को भी गिनते नहीं हैं।

मैं आज यदि यह कहूँ कि मन में उतार-चढ़ाव नहीं आते, तो यह गलत होगा। क्योंकि हमारे विचार और मन तो हमें पता नहीं कहाँ-कहाँ तक ले जाते हैं? पर, भीतर में एक बात का दृढ़ भरोसा है कि प्रभु मेरा कभी अहित नहीं होने देंगे, मेरे सब काम प्रभु करते हैं और आगे भी करते रहेंगे। हमने अपने परिवार की जिम्मेदारी उन पर सौंपी है, तो वे सभी प्रकार से हमारी रक्षा करेंगे ही करेंगे... और मेरा यह विश्वास दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जाए एवं जैसे प.पू. गुरुजी हमारी छोटी से छोटी बात को खूब महत्त्व देते हैं, वैसे ही हम भी प.पू. गुरुजी के छोटे से छोटे वचन को कभी गिरने न दें–ऐसी प्रगट प्रभु को प्रार्थना!

– अंजलि गोयल, पानीपत

सौरभ - १४

જય સ્વામિનારાયણ!

...આપ અમને અમેરિકા સુધી **'ભગવત્ કૃપા'** દ્વિમાસિક મોકલાવો છો. તે અમે વાંચીએ છીએ. તેનાથી અમને પૂજ્ય કાકાજી, પૂજ્ય ગુરૂજી તથા હરિભક્તોનો મહિમા સમજાય છે. અમે દરરોજ પ્રાતઃ પૂજા કરીએ છીએ. વચનામૃત, સ્વામીની વાતો, ગુણાતીતાનંદસ્વામીનું જીવનચરિત્ર, યોગી બાપાનું જીવનચરિત્ર વગેરે પુસ્તકો વાંચીએ છીએ. નિયમિત મંદિરે પણ (રવિવારે) જઈએ છીએ.

ગુરૂજીના પૂર્વાશ્રમના કુટુંબનો અને અમારા કુટુંબનો ઘણો જૂનો સંબંધ હતો... તેઓ મુંબઈમાં અમારા ઘરની પાસે જ રહેતા હતા. મારા પિતા ડૉક્ટર હોવાથી તેમના ફૅમીલી ડૉક્ટર હતા. ગુરૂજી પૂર્વાશ્રમમાં દિલીપભાઈ હતા; ત્યારથી હું એમને ઓળખું છું, પરંતુ હું ઘણો નાનો હતો. દિલ્હી હું જ્યારે આવતો ત્યારે એમને જરૂર મળતો. ત્યાં આવવાથી મને અપાર શાંતિ મળતી. **મેં આખા ભારતની તીર્થયાત્રાઓ કરી છે, પણ આવી શાંતિ મને મળી નથી. જાણે કે 'સકળ તીર્થ મારા સંતને ચરણે' એવો જ અનુભવ થયો છે...**

જ્યારે પણ દિલ્હી આવતો ત્યારે જાણે કે હું એમનો નાનો ભાઈ હોઉં એવા પ્રેમથી મને આવકાર્યો છે. મારા માટે તેમની કાર સ્ટેશન પર લેવા-મૂકવા મોકલી છે. વળી એમની કાર અને ડ્રાઈવર પણ આપી દેતા, જેથી મારે જ્યાં જવું હોય ત્યાં જઈ શકું... આવું તો સગાં-સંબંધીઓ પણ ન કરે. યોગીબાપાની જેમ– *'હેત તો કરે છે એવું, અનંત જનનીના જેવું...'*

દિલ્હીના હરિભક્તોમાં (મુક્તોમાં) પણ મેં જે સ્નેહ, સંપ, સુહૃદ્ભાવ, સેવા વગેરે જોયાં છે, એવા મેં ક્યાંય જોયા નથી. એ બધો પૂ. કાકાજી મહારાજ અને પૂ. ગુરૂજીનો પ્રભાવ છે. કોઈ મને

પૂછે કે *તમે ભગવાન જોયાં છે ?* તો હું છાતી ઠોકીને કહું કે *હા, મેં આ સંતવર્યમાં ભગવાન જોયાં છે.* ભગવાનની કરૂણા, દયા, પ્રેમ એવા અનેક ગુણો ગુરૂજીમાં છે અને 'પ્રગટ ભગવાન' તેમાં રહેલા છે.

એમની અંતર્યામીપણાની વાત કહું ? હું અહિંયા રીયલ એસ્ટેટનું કામ કરતો હતો. પ્રોપર્ટી લઉં, રેન્ટ કરું; પછી ભાવ વધે એટલે વેચી દઉં. ત્યારે (એકવાર) માર્કેટ સારું હતું, તેથી મેં પ્રોપર્ટી વેચી દીધી. તેના સારા પૈસા આવ્યા અને હું દિલ્હી આવ્યો, ત્યારે ગુરૂજીએ કહ્યું કે– *આ પૈસાથી ઘરની લોન ભરી દે.*

પણ, તે વખતે મારી જોબ ગઈ હોવાથી, બીઝનેસ કરવાની મારી ઇચ્છા હતી. તેથી મેં કહ્યું– *મને જોબ નથી, તેથી આ પૈસાથી હું બીઝનેસ કરવા માંગુ છું.* પછી બીઝનેસ કર્યો, પણ એમાં ઘણી મોટી ખોટ ગઈ અને બધાં પૈસા ગયા. ત્યારે થયું કે ગુરૂજીની આજ્ઞા માનીને ઘરની લોન ભરી દીધી હોત તો ઘણું સારું થાત.

ગુરૂજી ધૂનમાં ખૂબ જ માને છે. મારી મુશ્કેલીમાં હંમેશા મને ધૂન-ભજન કરવાનું જ કહે છે.

૨૦૧૨માં તમે ગુરૂજીનો ૭૫મો પ્રાગટ્યોત્સવ ઉજવી રહ્યા છો. મારી ઇચ્છા પણ ત્યાં આવવાની છે. હું આવી શકું એવી સ્વામિનારાયણ ભગવાનને પ્રાર્થના!

–ચૈતન્ય મહેતા, ન્યુજર્સી

[हिन्दी अनुवाद]

जय स्वामिनारायण!

...आप हमें अमेरिका तक '**भगवत् कृपा**' द्विमासिक भेजते हैं। इसे हम पढ़ते हैं। इससे हमें पूज्य काकाजी, पूज्य गुरुजी एवं हरिभक्तों की महिमा का ख्याल पड़ता है। हम हर रोज प्रातः पूजा करते हैं। वचनामृत, स्वामी की बातें, गुणातीतानंदस्वामिजी का जीवनचरित्र, योगीबापा का जीवनचरित्र वगैरह पुस्तकें पढ़ते हैं। नियमित रूप से रविवार को मंदिर में भी जाते हैं।

गुरुजी के पूर्वाश्रम के कुटुंब और हमारे कुटुंब का काफी पुराना संबंध था... मुंबई में वे हमारे घर के नज़दीक रहते थे। मेरे पिता डॉक्टर होने के कारण, उनके फॅमीली डॉक्टर थे। गुरुजी पूर्वाश्रम में दिलीपभाई नाम से जाने जाते थे; तब से मैं उन्हें पहचानता हूँ, परंतु तब मैं बहुत छोटा था। दिल्ली में मैं जब आता, तब उन्हें जरूर मिलता। वहाँ जाने से मुझे अपार शांति मिलती। **मैंने पूरे भारत की तीर्थयात्रा की है, लेकिन ऐसी शांति मुझे कहीं मिली नहीं। मानो 'सकल तीर्थ मेरे संत के चरणों में'–ऐसा ही अनुभव हुआ है...**

जब भी दिल्ली आता, तब मानो कि मैं उनका छोटा भाई हूँ, ऐसे प्रेम से वे मुझे मिले हैं। मेरे लिए वे अपनी कार स्टेशन पर लेने व छोड़ने भेजते हैं। इससे भी अधिक, अपनी कार और ड्राईवर भी दे देते हैं; ताकि मुझे जहाँ जाना हो, वहाँ जा सकूँ... ऐसा तो सगे-संबंधी भी नहीं करते। योगीबापा की तरह– *'प्रेम तो करते हैं ऐसा, अनंत जननी जैसा...'*

दिल्ली के हरिभक्तों में (मुक्तों में) भी मैंने जो स्नेह, संप, सुहृद्‌भाव, सेवा वगैरह देखी है, वैसी मैंने कहीं देखी नहीं। यह सब पू. काकाजी महाराज और पू. गुरुजी का प्रभाव है। कोई मुझसे पूछे कि *तुमने भगवान देखे हैं?* तो मैं छाती ठोक कर कहूँगा कि *हाँ, मैंने इस संतवर्य में भगवान देखे हैं।* भगवान की करुणा, दया, प्रेम जैसे कई गुण गुरुजी में हैं और 'प्रगट भगवान' उनमें रहते हैं।

उनके अंतर्यामी स्वरूप की बात कहूँ? मैं यहाँ (अमेरिका में) रियल एस्टेट का काम करता था। प्रोपर्टी खरीदता, रेन्ट पर देता; फिर उसके भाव बढ़ने पर बेच देता। यूँ (एक बार) मार्किट में भाव बढ़े, तब मैंने प्रोपर्टी बेच दी। उसके अच्छे पैसे आए और... मैं दिल्ली आया, तब गुरुजी ने कहा– *इन पैसों से घर की लोन भर देना।*

लेकिन, उस समय मेरी जॉब चली गई थी, सो मेरी इच्छा बिज़नेस करने की थी। अतः मैंने कहा– *मेरी जॉब नहीं है, सो इस पैसे से मैं बिज़नेस करना चाहूँगा।* फिर बिज़नेस किया, लेकिन उसमें काफी घाटा हुआ और सारा पैसा चला गया। तब एहसास हुआ कि गुरुजी की आज्ञा मान कर घर की लोन भर दी होती, तो बहुत अच्छा रहता।

गुरुजी धुन में खूब विश्वास रखते हैं। मेरी मुश्किलों में मुझे वे हमेशा धुन-भजन करने के लिए ही कहते हैं।

२०१२ में आप गुरुजी का ७५वाँ प्रागट्योत्सव मना रहे हो। मेरी इच्छा भी वहाँ आने की है। मैं आ सकूँ, ऐसी स्वामिनारायण भगवान से प्रार्थना!

– चैतन्य महेता, न्युजर्सी

✡✡✡

15 फरवरी, 2010 प.पू. गुरुजी की प्राकट्य तिथि की सभा

प.भ. जयप्रकाश मल्होत्राजी (दिल्ली)

तिथि के मुताबिक प.पू. गुरुजी के जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएँ और यही एक प्रार्थना कि गुरुजी हेल्धी-हेल्धी रहें... **मुंबई के 'मैत्री मिलन महोत्सव'** की खुमारी अभी उतरी नहीं है। **इसका श्रेय वशीभाई, भरतभाई और उनकी टीम को जाता है...** 'मैत्री मिलन महोत्सव' में भाग लेना हमारे जीवन की एक पूंजी बन गई!

...पिछले साल ७ मार्च को हमने यहाँ पर फोर्टी एइट अवर्स की अखंड परिक्रमा की थी, वह फिर आ रही है... **'काकाजी की समाधि' ऐसी पावरफुल जगह है कि कोई भी संकल्प करते हैं, वो पूरा होता है।** तो हम सब संत, युवक, बहनें, भाई-भाभियां, मिल कर प्रार्थना करते हुए अखंड परिक्रमा करें...

...इस उम्र में भी गुरुजी ऐसा परिश्रम करते हैं। 'मैत्री मिलन महोत्सव' के लिए भी ऐसा नहीं कि उन्होंने एक बार सभा में कह दिया, बल्कि एक-एक को पर्सनली कहा... और तो और, पंजाब जाकर भी सबको कहा

कि भई! ये मौका फिर नहीं मिलेगा। एक-एक को ढूंढ-ढूंढकर। मैं तो खुद गुरुजी के साथ पंजाब गया था, वहां पर सभा में भी बैठे-बैठे गुरुजी यही कहते रहे – अरे! उसको बुलाना था न, वो काकाजी के संबंध वाला है, कोई रह न जाए। ऐसे ढूंढ-ढूंढ कर सबको पर्सनली इन्वीटेशन दिया और वे सब आए भी। तो, वे जो ऐसा परिश्रम करते हैं, तो इनकी सेहत अच्छी रहे, ये राजी रहें। **राजी कैसे रहेंगे? – जब हम इनके मुताबिक चलेंगे।** तो, जैसा गुरुजी चाहते हैं वैसे हम चलें। 'मैत्रीभाव' से चलें, यही आज के दिन गुरुजी से माँगना है। इस रास्ते पर चलने का आप हमें बल प्रदान करें – यही आपके चरणों में प्रार्थना।

प.भ. पुनीतजी (पानीपत)

...हमें स्वरूप की पहचान **'तत्त्व से'** हो या न हो, पर जैसा गुरुजी कहते हैं कि हमारी एक ही प्रार्थना और प्रयास हरदम जरूर होना चाहिए कि किसी भी तरह से हमारा लगाव और संबंध संत से बढ़ता जाए। गुरुजी हम से और कुछ एक्सपेक्ट नहीं करते।

...मैंने देखा है कि किसी हरिभक्त को कोई प्रॉब्लेम हो, तो गुरुजी खुद भी उस प्रॉब्लेम को सॉल्व करने के लिए उसी कॉन्सियसनेस में उसके साथ लगे रहते हैं। दरअसल वे तो हमारे जीवन में यही करने आए हैं कि हमारा जीवन सुखी-सुखी हो जाए और भगवान से हम जुड़े रहें!

...दिल से सच्ची बात कहूं, तो अभी तक ये ही एकतरफा हमें निभा रहे हैं। प.पू. गुरुजी ने भी हमें कई बार कहा है कि **यदि हम सब निर्दोषबुद्धि और दिव्यभाव से आपस में मिलजुल कर रहें, तो संत धरती पर हम जितना चाहें उतने अरसे तक रहते हैं।** अगर हमारी ऐसी भावना है तो हम जरूर आज एक अंतर्दृष्टि करें कि क्या हम उस चीज को पकड़ पाए? क्या हम उस रास्ते पर चलते हैं? यह बात पक्की है कि हमें गुरुजी से प्यार है। तो, हम अपने आपको गिने बिना, अपनी एक गरज से लग पड़ें। इससे स्वभाव तो अपने ही टल जाएंगे, सो उसमें अपना ही फायदा है। हम सब बात करते हैं कि हम सब गुरुजी को बहुत खुश देखना चाहते हैं। दरअसल तो ऐसे संतों-स्वरूपों की पूरी जिंदगी देखें तो खूब संघर्ष भरी होती है। हम खूब विचारें कि ऐसे समर्थ होते हुए भी वे क्यों संघर्षशील रहते हैं? वे तो केवल हमारे लिए ही ऐसा संघर्ष झेलते रहते हैं।

काकाजी से किसी ने पूछा था – काकाजी वीच इज़ यॉर हॅपीएस्ट डे? तो काकाजी ने बताया था – एक तो **३ फरवरी का दिन उनका हॅपीएस्ट डे, जब बापा ने उन्हें साक्षात्कार कराया।** दूसरा – **जब उन्हें संस्था से अलग किया गया। वो इसलिए कि बापा को उन पर कितना भरोसा आ गया होगा! तभी तो वो अलग कर पाएं होंगे** और... उसे पप्पाजी ने तो सेलिब्रेट भी किया था। ये बातें मैं इसलिए कर रहा हूँ कि हम अंतर्दृष्टि करें कि हम कहाँ स्टेन्ड करते हैं? तीसरा – **उन्होंने बताया 'भरतभाई का बर्थडे!' मतलब कि भरतभाई जैसे तैयार हो गए हैं, जो सत्संग को आगे ले जाएँगे।** यूँ उन्होंने तीनों रूप बताए। उन्होंने अपने गुरु से अपना संबंध बताया कि गुरु को उन पर कितना भरोसा आया, वो उनका हॅपीएस्ट डे। आगे उनके शिष्य उस कक्षा पर आए हैं, वो भी उनका हॅपीएस्ट डे... अगर हम गुरुजी से सच में प्यार करते हैं, तो यहां अपने मंदिर और सत्संग में ऐसा एक उठाव लाएं कि हमेशा जब भी हम गुरुजी के सामने आएं, तो उनके चेहरे

पर एक खुशी हो। हम सिर्फ यह प्रार्थना ही न करें; बल्कि ऐसा धुन–भजन करें कि हम उनके बताए रास्ते पर चलना शुरू कर दें। यही सच्चा जन्मदिन मनाया, ऐसा माना जाए।

प.भ. पुरी अंकल (दिल्ली)

...कई झंझट हम लोगों ने अपने आप खड़े किए हुए होते हैं और कुछ अंदर से हमारे झंझट निकालने के लिए महाराज द्वारा खड़े किए होते हैं। पर, हम कितने भाग्यवान हैं कि सभी स्थितियों में गुरुजी जैसे मार्गदर्शक चौबीस घंटे हमारे लिए अवेलेबल हैं। किसी के मन में कोई बात उठे, वो रात को बारह बजे भी चाहे तो गुरुजी को मिल सकता है। उन्होंने मंदिर के सभी सेवकों को आदेश दे रखा है –

अगर रात को बारह बजे भी कोई फोन आए तो मुझे उठाना, यह नहीं कहना कि गुरुजी आराम में हैं।

दिन निकलते ही अपने आसन पर विराजमान हो जाते हैं। सुबह का नित्यक्रम निपटाने के लिए भी उनके लिए समय की बहुत कमी रहती है। बीच में अगर दस-पंद्रह मिनट या आधा घंटा मिलेगा, तो वे कहेंगे कि मैं फटाफट फ्रॅश होकर आता हूँ। ये सारा समय किसके लिए है? यह हमारे लिए सोचने की बात है।

बड़ी खुशी की बात ये है कि जब से गुरुजी 'मैत्री मिलन महोत्सव' से वापिस आए और उसके बाद सांकरदा का जो ट्रिप लगाया, इन दो यात्राओं के बाद उनके चेहरे से ही खुशी झलकती है। शायद वे यह याद करके खुश होते हैं कि काकाजी जो चाहते थे... साथ ही साथ काकाजी से जुड़े हुए 'पुराने जोगी' जो चाहते हैं, उसकी शुरुआत हुई।

...काकाजी ने एक प्रवचन में कहा है कि ***मैं चाहूँ तो मेरठ तक की लाईन लग जाए।*** ऐसा नहीं था कि काकाजी नहीं चाहते थे कि सत्संग बढ़े। सत्संग बढ़े, लेकिन जिस तरह का सत्संग वे चाहते थे, उस तरह का सत्संग बढ़े... **सत्संग ऐसा बढ़े कि हम लोगों में से कोई किसी भी तरह माईनस-प्लस सोचने की स्थिति में न आए।** आज के सत्संग में आए मुक्त सांसारिक रूप से बहुत बुद्धिशाली हैं। उनके विचारों को डायरेक्शन तो लीडर को ही देना पड़ता है।

अकसर गुरुजी बाहर से वापिस आते हैं तो मैं उनसे जरुर पूछता हूँ कि *गुरुजी आपकी यात्रा कैसी रही।* गुरुजी रुटीन रिप्लाई देते हैं कि *अच्छी थी।* लेकिन अबकी बार जब सांकरदा से वापिस आए, तब पूछने पर गुरुजी ने बहुत खुशी मन से कहा– *बहुत अच्छी थी।* वहाँ जो कुछ हुआ, उसे देखकर काकाजी और पप्पाजी खूब राजी हुए होंगे।

... गुरुजी ने जो रास्ता बताया है, वह अपनेपन की ओर ही ले जाता है। पर, बीच में **जो भटकन है, वह अपनी है। दिव्यभाव की बात तो बहुत ऊँची है। मैं अपनी बात करता हूँ कि कई बार गुरुजी कहते हैं – जैसा अपनापन मुझे आशीष पुरी (अपने लड़के) से है, क्या वैसा अपनापन आशीष शाह (नवीनभाई के बेटे) से है क्या? मैं अपने दिल की बात कर रहा हूँ कि डिफरॅन्स इज धॅर। बस, ये डिफरॅन्स हमारे मन से दूर हो,** हम दूर करने में सफल हो जाएं – ऐसी काकाजी, गुरुजी और बड़े पुरुषों के चरणों में प्रार्थना।

पू. वशीभाई (पवई)

जब हम अक्षरविहारीस्वामिजी को 'मैत्री मिलन महोत्सव' का कार्ड देने गए थे, तब उन्होंने कहा था कि **गुरुजी ने जो कुटुंबभावना की बात शुरू की है, उसे उन्हें आगे बढ़ाना है।** फिर वे 'मैत्री मिलन महोत्सव' में आए और सब देखा, तो उन्होंने पक्का करके शुरू ही कर दिया और... बीस तारीख (जनवरी) को सब स्वरूपों ने मिलकर जो भव्य शपथ ली, वह दृश्य जिस-जिसको देखने को मिला, वाकई यूनिक था... तो एक लहर-सी फैल गई है। **ये कुटुंबभाव की भावना की बात गुरुजी बहुत सालों से कहते आए हैं।** पर, एक शब्द है– **'एटीट्यूड'**! व्यक्ति को सब चेईन्ज करना मंजूर है, लेकिन एटीट्यूड चेंज करना मुश्किल है। क्योंकि एटीट्यूड संस्कृति बन जाती है। काकाजी ने लिखा है कि **संस्कृति के रवैये को चेइन्ज करना, मुश्किल होता है।** जिसे ट्रेण्ड बोलते हैं, उसे सॅट करना मुश्किल होता है। जैसे अपनी अक्षरपुरुषोत्तम की बात है–उस ट्रेन्ड को सॅट करने में शास्त्रीजी महाराज-योगीजी महाराज को सौ साल लगे। तब जाकर हम आज **'अक्षरपुरुषोत्तम की जय'** खुलेआम बोल सकते हैं...

...प्रत्यक्ष स्वरूप जब पृथ्वी पर हो, तभी उसकी मर्जी के हिसाब से जीना और उसकी मर्जी में पूरे दिलो-दिमाग़ से मिल जाना ही सबसे बड़ी भक्ति है। काकाजी और पप्पाजी ने संस्कृति के रवैये को चेईन्ज करके नया ट्रेन्ड चलाया कि हमें **'प्रत्यक्ष को मानना'** है। तब **'योगीजी महाराज को मानने की बात'** शुरु हुई। उससे भी आगे उन्होंने बताया कि एक कुटुंबभावना से सत्संग करना है। यह पुरानी ही बात है। **गुणातीतानंदस्वामिजी** की बात में जिक्र आता है कि **तप, त्याग, वैराग्य से क्या करना है? भगवान के भक्त में आत्मबुद्धि और प्रीति यही 'सत्संग' है।** इससे हम यूँ न समझें कि गुणातीतानंदस्वामिजी तप, त्याग, वैराग्य कम करके आँकने वालों में से थे। उनका ब्रह्मचर्य सॉलिड था। नियम धर्म के तो वे डॉक्टरेट-मास्टर थे। पर, इससे भी ज्यादा उन्होंने आत्मबुद्धि व प्रीति के सत्संग को महत्त्व दिया। यह जो नया ट्रेन्ड चल रहा है, गुरुजी उसमें 'शिल्पकार' हैं। **वे खुद भी काकाजी का एक बेमिसाल शिल्प हैं।** तो आज हम देख रहे हैं कि दिल्ली में आत्मबुद्धि का सत्संग पनप रहा है। अक्षरविहारीस्वामिजी, ज्योति बहन इसका इग्ज़ाम्पल भी देते हैं। यूँ ये पूरा डेवलपमेन्ट जो पिछले आठ-दस साल से गुरुजी ने किया है, बहुत छुपी भक्ति है। बाह्यदृष्टि से यह दिखाई नहीं देता...

मैं सोचता हूँ तो मुझे लगता है कि इस ट्रेन्ड को सॅट करने के लिए खूब भोग देना पड़ता है... ऐसी बात यूँ ही नहीं होती। मल्कानी साहब बताते हैं कि गुरुजी इज़ ऑलवेज एवेलेबल ऑन फोन। इट इज़ वेरी डिफीकल्ट, क्योंकि आदमी हमेशा अपने में ही उलझा हुआ रहता है... पर ऐसे परम भागवत संत–गुणातीत संत, धे लिव फॉर अधर्स। आलवेज एवेलेबल टु हेल्प अधर्स। धे कॅयर फॉर अधर्स और उनमें गुरुजी तो उसका जीता-जागता एग्ज़ाम्पल हैं। दरअसल **'गुणातीत भावना' की शुरुआत ही संबंध से होती है।** भगवान से संबंध हुआ, तो हम इस मार्ग पर आ गए **और उसकी पूर्णाहुति है केवल संबंध से जीना...**

गुणातीत भक्ति में भीड़ा (कसनी की) भक्ति होती है। भीड़ा (कसनी हो) पड़े और हम गुण लें,

तो एकदम आगे जाएँगे। मुझे गुरुजी के भीड़े के बारे में अच्छी तरह मालूम है। मैं तो गुरुजी के साथ बहुत समय से हूँ, लेकिन **आप लोगों ने भी गुरुजी को बहुत सपोर्ट किया है... गुरुजी ने सबके पीछे खूब परिश्रम किया है! अभिषेक को रॉ में से सुपरमॅन बना दिया! मैंने रॉ भी देखा और ये सुपरमॅन भी देख रहा हूँ...**

कल अनुपम मिशन के एक साधक को 'साहेब' ने बहुत अच्छी बात बताई कि जब कोई कुछ करोड़ रुपयों की सेवा करता है, तो वह दिखाई देता है कि ओहो! करोड़ रुपए की सेवा करी – दान दिया... लेकिन यदि कोई अपनी पूरी जिंदगी देता है – जो इससे खूब अधिक है और वह देने के बावजूद भी यदि उसमें 'गुणातीतभाव' प्रगट नहीं हुआ, तो फोकट गया। **वो क्या साधु, जो 'गुणातीतभाव' को नहीं पाया?** काकाजी की भावना थी कि हमें कुछ ऐसा करना है कि किसी को तकलीफ नहीं पड़े और हम 'गुणातीत भावना' में जीने लग पड़ें। गुणातीतानंदस्वामिजी की बात है – 'आत्मबुद्धि और प्रीति की बात'। गुणातीतानंदस्वामिजी की बातों का यहाँ परर्सोनीफिकेशन हुआ है। पृथ्वी के ऊपर जो ये अद्वितीय ट्रेन्ड सॅट होने जा रहा है, उसमें हम भाग्यशाली हैं कि हम निमित्त हैं... यह हमारा बहुत ही बड़ा सद्भाग्य है और हमें कुछ नहीं करना है। ऐसे गुरु के जोग में आ गए न? बाकी सब उनकी ही चिंता है।

काकाजी बोलते थे –

सच्चे गुरु मिलना मुश्किल,
मिले तो पहचानना मुश्किल,
पहचान लें, तो उनके साथ रहना मुश्किल
और
रहे, तो उसमें अखंड दिव्यभाव रखना मुश्किल।

काकाजी तो योगी बापा का एग्ज़ाम्पल देते हुए बोलते थे कि

योगीबापा में ऐसा कोई भी अवगुण नहीं था, सपने में भी शिक्षापत्री के विरुद्ध उनका वर्तन नहीं था। फिर भी कई बोलते कि योगी महाराज इतना ठीक नहीं करते हैं...

अपना मिश बताते हुए काकाजी का कहना था कि

तुम दिव्य मानोगे, तो काम हो जाएगा। पर, उनकी हर एक क्रिया दिव्य माननी बहुत मुश्किल होती है... काकाजी और पप्पाजी को धन्यवाद कि वे उन्हें दिव्य मानते ही रहे। धेन धे बिकेइम वन। वर्ना कहाँ साधु और कहाँ गृहस्थ का यह चोला!

...साथ में रहकर अखंड दिव्यभाव रखना जरुरी है, हम जहां रहते हों वहाँ। हमें यहाँ थोड़े दिन के लिए आना होता है, तो सब अच्छा लगता है। लेकिन मैं मुंबई में रहता हूँ, तो वहाँ मुझे दिनकरभाई में, बापू में, भरतभाई में, राजूभाई में अखंड दिव्यभाव रखना, इट इज़ ए चॅलेन्ज। आज गुरुजी का बर्थ-डे है, सो काकाजी बहुत खुश हैं... तो आज काकाजी, गुरुजी से यही प्रार्थना है कि हमेशा दिव्यभाव में अखंड रहते हमें कर देना...

प.पू. गुरुजी

...**'प्रगट ब्रह्म'** से संबंधित बातें भले समझ न आती हों, फिर भी आनंद आएगा। क्योंकि 'ब्रह्म' का यही लक्षण है। लेकिन, ये बातें कैसी हैं कि सुनते हैं, तो ऐसा लगता है कि ऐसी नहीं है। अपना माईन्ड कई बार रिबफ होता है। मेरा तो होता है। ये बड़े संत जो बात करते हैं, वो वाकई ऐसी है – अपना मन उसे टोटल स्वीकार नहीं करता है...

एक बार काकाजी ने बात की कि जिस साधु को अपनी निजी कोई महत्वाकांक्षा होती है, वो प्रभु का करण नहीं बन सकता। जिस साधु को निजी महत्वाकांक्षा हो कि **'मेरा सत्संग' खूब बढ़े या हमारा मंदिर ऐसा हो जाए या हमारी कीर्ति फैल जाए या हमारा रेकग्नीशन हो जाए, वो प्रभु का करण नहीं बन सकता- इनस्ट्रुमेन्ट नहीं बन सकता...** हम अपने कोचले (दायरे) में से बाहर नहीं आते, भगवान की आवाज़ कहाँ से सुनेंगे? उनकी बात सुनने के लिए हमारा वर्किंग बंद होना चाहिए, तब आवाज़ आएगी। इसका उपाय क्या कि पहले हम मुक्तों के लिए तो स्पॅर रहें। भगवान की बात तो बाद में, पहले मुक्तों के लिए तो स्पॅर रहें। कहीं भी इनका काम हो, तो अपना कुछ निजी बीच में नहीं आए।

मुझे जोगी महाराज की एक बात बहुत याद रही है... जूनागढ़ में बापा ने हमें एक जगह बता कर दंडवत् करने को कहा था। वहाँ कोने पर दो पत्थरों के ऊपर एक पत्थर रखा हुआ था। वह देख कर कोई समझ नहीं पाया। सबने पूछा, तो बापा ने बताया – मैं किसी 'सेवा' में से फ्री होता, तो मैं यहाँ आकर बैठता था; ताकि किसी को कुछ काम हो, तो मुझे यहाँ से ले जाए। हर एक को पता रहता था कि जोगी फ्री होगा, तो यहीं मिलेगा। इसका मतलब यह भी कि बापा के पास कोई डिपार्टमेन्ट नहीं था। **कइयों को ऐसा होता है कि कोई डिपार्टमेन्ट मिल जाए, तो आई कॅन शॉ माई स्कील। उसमें सेवा की कोई भावना नहीं होती... सिर्फ, मान चाटना होता है...**

तो, भक्तों के लिए हम स्पेयर रहें। हम क्या करेंगे? काम में से फ्री भी हो गए हों, तो ऐसी जगह जाकर सो जाएंगे कि मिलें ही नहीं, ताकि बीच में कोई उठाने आए ही नहीं। कहाँ जोगी महाराज की रीत और कहाँ हम? लेकिन ऐसी **कसनी की भक्ति में ही पिण्डीकरण होगा, उसमें से शक्ति भी आएगी...** यह बात भी हम मानेंगे नहीं, लेकिन **काकाजी बोलते थे कि हम अगर इस रास्ते पर चलने लग जाएँगे, तो धेर विल बी सिरिज ऑफ स्पिरीच्युअल इक्सपिरियन्सिस; यानि आश्चर्यों की परंपरा!** इस रास्ते पर हम चलते ही रहें। **यह रास्ता कौन-सा? कुटुंबभाव और महिमा से एक-दूसरे की भीड़ाभक्ति, कसनी का!** यूँ प्रेमपूर्वक चलते रहेंगे; तो महाराज अपने वश हो जाएँगे। महाराज ने भी कहा है–

भक्ति एनी भली मानीश राचीश एना रंगमां, थइने रहेशे दासना दास जे सत्संगमां।

भगवान को हमारे आगे-पीछे लट्टू बना कर यदि घुमाना हो, तो सीधा-साधा आसान तरीका यही है कि **भक्तों की हम 'जी हजूरी' किया करें।**

P. Malkani Uncle

Sahajanand Swami Maharaj ki Jay!

Holy Excellency Param pujya Guruji, My dear friend Vashibhai, - he is a friend whom I depend on all dimensions of life-*vyavahãrik* and otherwise. Many a times, I am surprised that I call Vashibhai and He says He is in Kandla, next day He is in Aurangabad, then, suddenly He is in Delhi, He is travelling all the time. एक line गुजराती में याद आती है, correctly बोल रहा हूँ या नहीं - 'साधु रमता भला।' Vashibhai is such Spiritually Elevated Person, but yet He is free to give His advice freely on many subjects of life.

P.P. Anandi Mai, all sisters, saints, satsangis...

My heartiest Jay Swaminarayan to all on this special day. Today is Guruji's birthday. Truly, a day for celebration. We are fortunate, I have said many times, we are lucky, we have been graced. So many times I feel, are we gifted? the answer is no, we are not gifted. But we have been given a gift. A great gift of having the presence of Gunãtit swaroop. Kakaji made Spiritual life very simple for us. I am not into much of literature on spirituality. But in all these years, I have understood a very simple thing. **Hold on, cling on, attach yourself, mentally, physically and otherwise, to a Gunãtit swaroop and your life is done.** There is nothing else to do really. It's surprising. But it's true. In my own way, I may seem very strange in saying this, and truly, sincerely I am saying this in front of all of you. Guruji is here, I celebrate His birthday every day.

Someone would ask me - how do you celebrate it? What do you do? See, Guruji started a process of doing this morning chanting from 6:55 to 7:15. It's a time of remembering Him. Time of remembering your Guru, time of realizing what he has done for you. Time of remembering that He is there for anything that you may deserve, desire or wish for, if you do it with all sincerity. It is a beginning of my day. Next, I know that Guruji gets free at 7:16; I make it a point, happily - very happily, I look forward to it, I wait for those two minutes because till 7:15, I am also joining in the dhun of Guruji's celebration. It's a pathway to redemption actually. What He has done is a joint celebration. So, I wait for those two minutes, so that it is 7:18 & I can call & say **'Jay swaminarayan'** to Him. Nothing beyond that. But it brings me a lot of solace & happiness for the

whole day. Why? Because to my mind, it may be different to each individual, but to my mind, I feel that I started my day with a Divine Soul & with Divine sincerity. In this way, I celebrate His birthday every day. Strange as it may sound, I feel elevated, I feel happy.

So many years that I have spent in Guruji's company, I reflect on those years now. Did I belong here? Was I destined to come here? I don't know the answers. Frankly, even today, I don't know the answers. But I know, I came & I know He accepted me & I Know that He has tolerated me in a thousand different ways & yet I am here. The only thing that I consider today is my good luck. My greatest good fortune.

I have said even many times before & I acknowledge it even today, **it was perhaps the best day, the luckiest day & the most fortunate day of my life when I came here.** You see, over all, reflecting on all those years, I am surprised even today that I am here. That I am in company of a Gunãtit swaroop, who is aware of my faults, who is aware of my temperament, who is aware of my good & bad, but yet He has accepted me for which I offer Him greatest thanks in my life. We come here basically, for protection. Believe it or not, in everyone's mind, in very different ways, we seek protection & if each one of us thinks within his mind, & contemplates, we have remained protected & we are protected everyday under Guruji's umbrella. That fear of what will happen tomorrow is almost gone. I am saying–'almost'. It would totally go away if we were totally involved with Him. It is our shortcoming, not His. If we were totally with Him, probably in Gujarati you would say– लय और लीन हो जाते गुरुजी में, that fear, even that small fear would not remain. So, we have the greatest opportunity to be under His umbrella. It is for us to take full benefit. I would not only say the full benefit, the final benefit that life can give us, that Human life, that Human birth can give us. We have that opportunity. **We do not have to seek anymore.** Here, it is available to us. The only thing is that we must dive into it deeply, grab it & never let it go. So, God bless us all. We seek Guruji's blessings, His grace & convey to Him our deepest thanks from my side, from my family side & on behalf of all satsangis. Guruji, I thank you for keeping us under your umbrella. Thanks. Jay Swaminarayan.

[हिन्दी अनुवाद]

पू. मल्कानी अंकल

सहजानंदस्वामी महाराज की जय!

परम पूज्य गुरुजी, मेरे प्रिय मित्र वशीभाई–वे एक ऐसे मित्र हैं, जिनका मैं जीवन के हर पहलू से–व्यावहारिक या अन्य किसी भी प्रकार से-आधार ले सकता हूँ। मुझे कई बार यह जान कर आश्चर्य होता है कि जब मैं वशीभाई को फोन करता हूँ, तो वे कहते हैं कि मैं कांडला में हूँ, अगले दिन वे औरंगाबाद में होते हैं और फिर, अचानक वे दिल्ली में होते हैं। वे हमेशा यात्रा करते रहते हैं। एक लाइन गुजराती में याद आती है, सही बोल रहा हूँ या नहीं– 'साधु रमता भला'। वशीभाई ऐसे ही आध्यात्मिकता की ऊँचाई को पाए हुए व्यक्ति हैं, फिर भी वे जीवन के कई विषयों पर सहज सलाह दे सकते हैं।

प.पू. आनंदी माई, बहनें, संत एवं सत्संगीजन,

आज के मंगल दिन पर सभी को मेरे हार्दिक जय स्वामिनारायण! आज प.पू. गुरुजी का प्रागट्य दिन है। वास्तव में आनंद करने का दिन! हम बड़े भाग्यशाली हैं। मैंने कई बार कहा है कि हम खुशकिस्मत हैं, जो हम पर प्रभु की कृपा हुई है। कई बार मैं विचार करता हूँ कि क्या हम कुछ विशिष्ट प्रकार के व्यक्ति हैं? जवाब है–नहीं, हम कुछ विशेष नहीं, पर हमें एक भेंट मिली हुई है। गुणातीत स्वरूप के हमारे मध्य प्रगट रूप में मौजूद होने की अनुपम भेंट! प.पू. काकाजी महाराज ने आध्यात्मिक जीवन को हमारे लिए बहुत सरल बना दिया। मैंने अध्यात्म का साहित्य ज़्यादा नहीं पढ़ा, पर इन वर्षों में मैंने एक सरल उपाय समझ लिया है। अपने आपको मानसिक, शारीरिक या अन्य किसी भी प्रकार से एक गुणातीत स्वरूप के साथ जोड़ लो, संबंध कर लो, उन्हें पकड़े रखो; तो तुम्हारा जीवन सार्थक हो जाएगा। सच में और कुछ करने की जरूरत नहीं। यह अद्‌भुत विस्मित करने वाली बात है, पर सत्य है। मेरा यह मत है। शायद मेरी यह बात आपको अजीब लगे, पर मैं सच्चाई और संजीदगी से आप सबके सामने कह रहा हूँ। गुरुजी भी यहाँ उपस्थित हैं। मैं उनका जन्मदिन रोज मनाता हूँ।

यदि कोई मुझ से पूछे कि आप कैसे मनाते हैं, आप क्या करते हैं? तो देखो, गुरुजी ने सुबह ६:५५ से ७:१५ तक धुन करने का नियम बनाया है। यही समय है उन्हें याद करने का। यह समय है अपने गुरु को याद करने का और उन्होंने तुम्हारे लिए जो किया, यह महसूस करने का। यही वह समय है जब आप यह याद करें और याद रखें कि यदि आप हृदय की पूरी सच्चाई व ईमानदारी से कोई कामना या इच्छा करें, तो गुरुजी आपको वे सभी वस्तुएँ उपलब्ध करा देंगे, जिनके आप अधिकारी या पात्र हैं! इससे ही मेरे दिन की शुरूआत होती है। फिर, मुझे मालूम है कि गुरुजी ७:१६ पर फ्री हो जाते हैं। तो, जैसा कि मैंने (फोन करने का) नियम बना रखा है, सो खुशी से–अतिशय आनंद से, मुझे इस घड़ी का इंतजार रहता है, मैं उन दो मिनिट की उत्सुकता से राह देखता हूँ, क्योंकि ७:१५ तक तो मैं भी गुरुजी के साथ धुन में शामिल होता हूँ। वास्तव में यह मोक्ष का द्वार है। उन्होंने जो किया है, वह एक संयुक्त समारोह है। तो, मैं दो मिनिट राह देखता हूँ कि ७:१८ हों और मैं फोन करके उन्हें **'जय स्वामिनारायण'** कह सकूँ। इससे अधिक कुछ नहीं। पर, यह मुझे पूरे

दिन शांति और आनंद प्रदान करता है। क्यों? क्योंकि, मेरे विचार से हर एक की विचारधारा अलग हो सकती है; पर, मैं सोचता हूँ और महसूस करता हूँ कि मैंने अपने दिन की शुरूआत एक दिव्य चेतना की स्मृति और दिव्यता से की है। इस प्रकार मैं उनका प्रागट्यदिन रोज मनाता हूँ। सुनने में यह बात शायद अजीबोगरीब लगे, पर मैं अपने आपको ऊँचा उठा हुआ और आनंदित महसूस करता हूँ।

अब मैं, उन वर्षों पर जो मैंने गुरुजी की निश्रा में बिताए हैं, पर एक नज़र डालता हूँ। क्या मैं यहाँ का हूँ? क्या मेरा यहाँ आना निश्चित था? इन बातों का मुझे उत्तर नहीं पता। आज भी मुझे इन सवालों का उत्तर मालूम नहीं है। पर, मैं इतना जानता हूँ कि मैं यहाँ आया और उन्होंने मुझे स्वीकार किया। मैं यह भी जानता हूँ कि हज़ारों भिन्न-भिन्न तरीकों से उन्होंने मुझे निभाया ही है, तभी मैं यहाँ हूँ। अतः आज मुझे अपनी इस खुशकिस्मती पर गर्व है। यह मेरा अहोभाग्य है!)

जैसे कि मैंने पहले भी कई बार कहा है आज भी स्वीकार करता हूँ कि **मेरी जिंदगी का सर्वोत्तम-सुनहरा, सबसे ज़्यादा खुशकिस्मत और सौभाग्यशाली दिन वो था, जब मैं यहाँ आया।** सभी पहलुओं पर ध्यान देते हुए, उन सभी सालों पर गौर करता हूँ, तो मुझे खुद आश्चर्य होता है कि मैं यहाँ मौजूद हूँ और... मुझे ऐसे गुणातीत स्वरूप की निश्रा मिली है, जो मेरी कमियों व दोषों से भलीभाँति परिचित हैं, जो मेरे अच्छे और बुरे दोनों पक्षों को जानते हैं, इसके बावजूद उन्होंने मुझे स्वीकार किया है। इस सब के लिए मैं उन्हें अपने जीवन के सर्वाधिक धन्यवाद अर्पण करता हूँ।

मूलतः, हम यहाँ अपनी सुरक्षा के लिए आते हैं। मानें या न मानें, हर एक अपने ढंग से किसी न किसी तरह की सुरक्षा की खोज में रहता है और यदि हम में से प्रत्येक इस बात पर विचार करे, तो एहसास होगा कि हमारी रक्षा होती ही रही है। गुरुजी की छत्रछाया के कारण हम विपदाओं से बचे हुए हैं। यह डर कि कल क्या होगा लगभग सभी के दिल से निकल चुका है। मैं कह रहा हूँ– 'लगभग' और... यदि हम उनमें संपूर्णतः लयलीन हो जाएंगे, तो वह डर पूर्ण रूप से चला जाएगा। यदि नहीं जाता तो वह कसर हमारी है, उनकी नहीं। यदि हम उनमें पूर्णतः डूब जाएं, जिसे गुजराती में शायद आप कहेंगे – लय और लीन हो जाते गुरुजी में – तो वह हल्का-सा भी डर नहीं रहेगा। तो, हमें उनकी छत्रछाया में रहने का पूर्ण अवसर मिला है। उसका पूरा फायदा उठाना हम पर निर्भर है। मैं तो कहूँगा कि सिर्फ पूरा फायदा ही नहीं, पर एक मात्र सर्वाधिक लाभ जो हमें मानव जीवन से मिल सकता है – जो मानव जीवन हमें दे सकता है, उसे पा लेने का हमारे पास यह एक सुनहरी मौका है। **हमें और कुछ खोजने की आवश्यकता नहीं है।** यहाँ वो हमें उपलब्ध है। हमें सिर्फ पकड़े रख कर, उनमें गहरा डूब जाना है। उन्हें कभी छोड़ना नहीं है। सो, प्रभु हम सबको आशीष दें। हम गुरुजी से आशीर्वाद और अनुग्रह की याचना करते हैं, साथ ही अपनी तरफ से, अपने परिवार की ओर से और सभी सत्संगिओं की ओर से दिल की गहराई से धन्यवाद करते हैं। हे गुरुजी, आपने जो हमें अपनी छत्रछाया में रखा है, इसके लिए आपको कोटि-कोटि धन्यवाद! धन्यवाद! जय स्वामिनारायण!

(ध्वनिमुद्रण पर आधारित)

शेष अगले अंक में...

✡✡✡

भजन

(राग – कोई जब राह न पाए...)

संबंध संत का पाया, मुक्तों का संग पाया,
अखंड दिव्य मान के जो जिया,
उसने ही समझा ब्रह्मज्ञान,
उसके लिए यहीं अक्षरधाम।

जैसे देह और उसके संबंधी से प्यार,
कर लें मुक्तों का वैसा ही स्वीकार,
संबंध की महिमा हो, गुण दोष का ना भार, (२)
स्वरूपलक्षी, सुहृद् बन जाएं, रसबस हो पाएं,
कि काकाजी के हम बन पाएं...
मुक्तों के बने जो हम गुलाम,
जीतेजी यहीं पाएं अक्षरधाम।

तेरे संकल्प में अमोघ है बल,
दर्शन मात्र से वृत्ति जाए पिघल,
स्मृतियाँ तेरी अंतर को करतीं शीतल,(२)
अनुवृत्ति तेरी जान पाएं, भक्तों में 'स्व' भुलाएं,
निरंतर महिमा गाएं...
तुम्हें राजी करने की हो तान, यही बने मेरा निशान।

गुरु साक्षात् अक्षरधाम का द्वार,
गुरु आज्ञा ले जाए भवसागर से पार,
जीव को शिव बना दें, ऐसे ये शिल्पकार,(२)
इनकी योजना में जुड़ जाएं, सरल बन जाएं,
रूपांतर ये हमारा कर दें...
अंतर का मिटा के अंधकार, प्रगटा दो जीव में ब्रह्मभाव।

संबंध संत का पाया, मुक्तों का संग पाया,
अखंड दिव्य मान के जो जिया,
उसने ही समझा ब्रह्मज्ञान,
उसके लिए यहीं अक्षरधाम।

* * *

निमंत्रण

12 जून 2010, शनिवार

ब्रह्मस्वरूप प.पू. काकाजी महाराज का 91वाँ प्राकट्य दिन!

आइए,

प.पू. गुरुजी की निश्रा में – सायं : 6:30 से 9:15

अशोकविहार - 'ताड़देव', श्री अक्षरपुरुषोत्तम स्वामिनारायण मंदिर में

इष्ट मित्रमण्डली सहित उपस्थित रहकर

दर्शन, सेवा, समागम का लाभ लेकर स्वयं को धन्य करें.....

व्रतोत्सवसूची

(1)	दि.	28.5.2010,	शुक्रवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का स्वधामगमन दिन
(2)	दि.	1.6.2010,	मंगलवार	—	ब्रह्मस्वरूप पप्पाजी महाराज का दृष्टा दिन गुणातीत ज्योत स्थापना दिन
(3)	दि.	8.6.2010,	मंगलवार	—	एकादशी, व्रत
(4)	दि.	9.6.2010,	बुधवार	—	ब्रह्मस्वरूप योगीजी महाराज की प्राकट्य तिथि, प.पू. गुरुजी की भागवती दीक्षा तिथि
(5)	दि.	12.6.2010,	शनिवार	—	**गुरुहरि प.पू. काकाजी महाराज का प्राकट्य दिन** *(सायं 6:30 से 9:15 मनाएंगे।)*
(6)	दि.	21.6.2010,	सोमवार	—	भगवान स्वामिनारायण की स्वधामगमन तिथि
(7)	दि.	22.6.2010,	मंगलवार	—	भीम एकादशी, व्रत
(8)	दि.	25.6.2010,	शुक्रवार	—	वटसावित्री
(9)	दि.	8.7.2010,	गुरुवार	—	एकादशी, व्रत
(10)	दि.	13.7.2010,	मंगलवार	—	रथयात्रा
(11)	**दि.**	**21.7.2010,**	**बुधवार**	**—**	**देवशयनी एकादशी, व्रत – चातुर्मास प्रारंभ**
(12)	**दि.**	**25.7.2010,**	**रविवार**	**—**	**गुरुपूर्णिमा – व्यासपूर्णिमा**

R.N.I. 28971/ 77 (Air Mail)

'**Bhagwatkripa**' Bimonthly Magazine – Despatched on 15th of alternate months

If undelivered please return to :— *Printer, Publisher, Editor :* **SHRI PRABHAKER RAO** ***FOR*** **YOGI DIVINE SOCIETY- DELHI**

'Taad-dev', Kakaji Lane, Swaminarayan Marg, Ashok Vihar-III, Delhi-110 052 (India) Tel.: 2730 1327

Printed at : **D.K. FINE ART PRESS (P) LTD.,** A 6, Community Centre, Nimri Colony, DELHI-110 052